गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 257
दि. 18.01.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

स्टारलिंक लाइसेंस विवाद पर विराम: सीवीसी की जांच में बेदाग निकले अश्वनी वैष्णव

(जीएनएस)। एलन मस्क की अंतरिक्ष आधारित इंटरनेट सेवा स्टारलिंक को भारत में लाइसेंस दिए जाने को लेकर उठे कथित अनियमितता के आरोपों पर आखिरकार विराम लग गया है। केंद्रीय सतर्कता आयोग की विस्तृत जांच रिपोर्ट लोकपाल के समक्ष पेश किए जाने के बाद केंद्रीय मंत्री अश्वनी वैष्णव को पूरी तरह क्लीनचिट मिल गई है। लोकपाल के अध्यक्ष जस्टिस ए.एम. खानविलकर की अध्यक्षता वाली छह सदस्यीय पीठ ने रिपोर्ट का परीक्षण करते हुए यह स्पष्ट कर दिया कि मामले में भ्रष्टाचार या पक्षपात का कोई प्रमाण नहीं मिला और इसलिए आगे किसी प्रकार की जांच की आवश्यकता नहीं है। इस निर्णय के साथ ही पिछले कई महीनों से राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में चल रही अटकलों का दौर समाप्त हो गया है।

लोकपाल की पीठ ने अपने आदेश में बेहद कड़े शब्दों में कहा कि शिकायत में लगाए गए आरोप ठोस तथ्यों पर आधारित नहीं थे, बल्कि सोशल मीडिया पोस्ट, इंटरनेट पर उपलब्ध लेखों और व्यक्तिगत अनुमानों से गढ़े गए थे। जांच में यह कहीं भी साबित नहीं हुआ कि स्टारलिंक कम्युनिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड को शर्तों में अनुचित ढील देकर लाभ पहुंचाया गया हो। आयोग के मुताबिक लाइसेंस देने की पूरी प्रक्रिया निर्धारित नियमों, तकनीकी मानकों और सुरक्षा प्रावधानों के दायरे में रहकर संपन्न हुई। किसी भी स्तर पर न तो नियमों का उल्लंघन हुआ और न ही निर्णय लेने की प्रक्रिया में मंत्री की ओर

से कोई हस्तक्षेप पाया गया।

रिपोर्ट का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि जिस तारीख को स्टारलिंक को लाइसेंस जारी किया गया, उस समय अश्वनी वैष्णव दूरसंचार विभाग में निर्णय लेने वाली भूमिका में थे ही नहीं। सीवीसी ने दस्तावेजों के आधार पर बताया कि उन्होंने 2024 के मध्य में ही संबंधित मंत्रालय का प्रभार छोड़ दिया था, जबकि लाइसेंस 6 जून 2025 को जारी हुआ। ऐसे में मंत्री पर लगाए गए सीधे आरोप तथ्यात्मक रूप से ही टिक नहीं पाए। लोकपाल ने भी माना कि शिकायतकर्ता ने इस बुनियादी तथ्य की अनदेखी करते हुए केवल संदेह के आधार पर गंभीर आरोप गढ़ दिए थे।

जांच में यह भी सामने आया कि स्टारलिंक को लाइसेंस देने की प्रक्रिया अचानक नहीं शुरू हुई थी, बल्कि इसकी शुरुआत 14 अक्टूबर 2022 को हो चुकी थी। लगभग तीन वर्षों तक विभिन्न मंत्रालयों, तकनीकी एजेंसियों और सुरक्षा संस्थानों ने इस प्रस्ताव की बारीकी से पड़ताल की। अंतर-मंत्रालयी समितियों ने उपग्रह आधारित इंटरनेट सेवा से जुड़े हर पहलू, विशेषकर डेटा सुरक्षा, निगरानी तंत्र और राष्ट्रीय हितों पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन किया। कई दौर की बैठकों और स्पष्टीकरणों के बाद ही यूनिफाइड लाइसेंस के साथ अतिरिक्त सुरक्षा शर्तें जोड़ी गईं, ताकि देश की संप्रभुता और सामरिक हित पूरी तरह सुरक्षित रहें।

रिपोर्ट में इस बात का भी विशेष उल्लेख किया गया कि स्वयं अश्वनी वैष्णव ने प्रक्रिया में अधिक पारदर्शिता लाने के लिए मामला राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय को भेजने की सिफारिश की थी। 19 अप्रैल 2024 की बैठक में उन्होंने कहा था कि अंतरिक्ष आधारित संचार सेवा का दायरा बेहद संवेदनशील है, इसलिए अंतिम निर्णय से पहले सुरक्षा एजेंसियों की राय लेना अनिवार्य है। जांच अधिकारी ने इसे मंत्री की जिम्मेदार और संतुलित भूमिका का प्रमाण माना, जो आरोपों के विपरीत उनकी निष्पक्ष मंशा को दर्शाता है।

शिकायत का मुख्य आधार मंत्री द्वारा सोशल मीडिया पर किए गए कुछ पोस्ट बताए गए थे, जिन्हें बाद में हटा लिया गया था। शिकायतकर्ता ने इसे संदिग्ध मानते हुए भ्रष्टाचार से जोड़ दिया था, लेकिन सीवीसी ने स्पष्ट किया कि पोस्ट डिलीट करना किसी अनियमितता का सबूत नहीं हो सकता। डिजिटल मंचों पर अभिव्यक्ति और उसके संपादन को कानूनी प्रक्रिया से जोड़ना तर्कसंगत नहीं है। लोकपाल ने भी कहा कि केवल ऑनलाइन चर्चाओं के सहारे किसी संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति पर गंभीर आरोप लगाना न्यायसंगत नहीं ठहराया जा सकता।

इस फैसले को प्रशासनिक पारदर्शिता की जीत के रूप में देखा जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि उपग्रह इंटरनेट जैसे उभरते क्षेत्र में विदेशी कंपनियों का प्रवेश स्वाभाविक रूप से बहस को जन्म देता है, लेकिन निर्णय तथ्यों और सुरक्षा मानकों के आधार पर ही होने चाहिए। सीवीसी और लोकपाल की संयुक्त पड़ताल ने यह संदेश दिया है कि नीतिगत फैसलों को राजनीतिक शोर से अलग रखकर संस्थागत कसौटियों पर ही परखा जाएगा। क्लीनचिट मिलने के बाद सरकार के लिए स्टारलिंक समेत अन्य वैश्विक तकनीकी निवेशों का रास्ता भी अधिक स्पष्ट और भरोसेमंद बन गया है।

वंदेमातरम् की गूंज में सजेगा गणतंत्र का महापर्व

(जीएनएस)। देश अपना 77वां गणतंत्र दिवस एक नई भावना और ऐतिहासिक गौरव के साथ मनाने जा रहा है। इस बार 26 जनवरी की मुख्य परेड की थीम 'वंदेमातरम्' रखी गई है, जो स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा और आधुनिक भारत के आत्मविश्वास को एक साथ प्रस्तुत करेगी। कर्तव्य पथ पर होने वाले भव्य आयोजन में 30 झांकियां निकलेंगी, जिनका मूल विचार 'स्वतंत्रता का मंत्र–वंदे मातरम, समृद्धि का मंत्र–आत्मनिर्भर भारत' होगा। इन झांकियों के माध्यम से देश की सांस्कृतिक विविधता, सैन्य शक्ति, वैज्ञानिक उपलब्धियों और सामाजिक विकास की झलक दिखाई जाएगी।

परेड स्थल को इस बार विशेष रूप से ऐतिहासिक रंग में सजाया जा रहा है। कर्तव्य पथ पर बने एनक्लोजर के बैकग्राउंड में वंदेमातरम् की पंक्तियों से सजी एक पुरानी और भावपूर्ण पेंटिंग तैयार की जा रही है, जो आने वाले हर दर्शक को स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में ले जाएगी। मुख्य मंच पर फूलों से सजाई गई विशेष आकृति के माध्यम से वंदेमातरम् के रचयिता बंकिम चंद्र चटर्जी को श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी। आयोजन से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि इस बार पूरा कार्यक्रम राष्ट्रीय चेतना, स्वदेशी भावना और सांस्कृतिक गौरव को केंद्र में रखकर तैयार किया गया है।

अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की दृष्टि से भी यह गणतंत्र दिवस खास रहेगा। इस वर्ष परेड के मुख्य अतिथि के रूप में यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन शामिल होंगी। यूरोप के शीर्ष नेतृत्व की उपस्थिति भारत और यूरोपीय संघ के बीच बढ़ती रणनीतिक साझेदारी का संकेत मानी जा रही है। यह आमंत्रण इस बात का भी प्रतीक है कि भारत वैश्विक मंच पर एक भरोसेमंद और प्रभावशाली शक्ति के रूप में अपनी पहचान मजबूत कर चुका है।

सैन्य परेड में इस बार कई नए और अनोखे दृश्य देखने को मिलेंगे। पहली बार बैक्ट्रियन ऊंटों का दस्ता कर्तव्य पथ पर कदमताल करेगा, जो सीमावर्ती क्षेत्रों में भारतीय सेना की परंपरागत ताकत का प्रतीक है। इसके साथ ही 'भैरव' नामक नई बटालियन भी मार्च पास्ट में शामिल होगी। इस टुकड़ी को आधुनिक युद्धक क्षमताओं और विशेष अभियानों के लिए तैयार किया गया है, जिसकी झलक गणतंत्र दिवस पर जनता के सामने रखी जाएगी। सेना के तीनों अंगों की टुकड़ियां अनुशासन और सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन करेंगी। आकाश में होने वाला फ्लाईपास्ट हमेशा की तरह आकर्षण का मुख्य केंद्र रहेगा। इस वर्ष 29 अत्याधुनिक विमान अपनी गर्जना से आसमान को गुंजायमान करेंगे। इनमें राफेल, सुखोई-30, अपाचे हेलीकॉप्टर जैसे शक्तिशाली लड़ाकू प्लेटफॉर्म शामिल हैं, जो भारत की वायुशक्ति की सामर्थ्य का परिचय देंगे। हालांकि इस बार स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस को फ्लाईपास्ट में शामिल नहीं किया गया है, जिस पर कुछ सवाल भी उठे हैं। इस संबंध में रक्षा सचिव आर. के. सिंह ने स्पष्ट किया कि परेड में हर साल कुछ प्लेटफॉर्म शामिल किए जाते हैं और कुछ नहीं, इसके पीछे कोई विशेष कारण नहीं है। सेना के पास उपलब्ध बेहतरीन साधनों में से चयन कर प्रदर्शन किया जाता है।

गणतंत्र दिवस केवल सैन्य परेड का आयोजन नहीं, बल्कि लोकतंत्र के उत्सव का प्रतीक है। इस बार की थीम वंदेमातरम् देशवासियों को उस भावना से जोड़ती है, जिसने गुलामी के दौर में करोड़ों लोगों को एक सूत्र में बांधा था। आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना के साथ जोड़ी गई यह थीम यह संदेश देती है कि आज का भारत केवल अपने अतीत पर गर्व नहीं करता, बल्कि भविष्य को स्वयं गढ़ने का संकल्प भी रखता है। कर्तव्य पथ पर होने वाला यह आयोजन देश की नई पीढ़ी में राष्ट्रभाव को और मजबूत करेगा तथा दुनिया को भारत की एकता, शक्ति और सांस्कृतिक गहराई का नया परिचय देगा।

कांग्रेस ने असम को अपना नहीं माना, घुसपैठियों से जमीनों पर कब्जा कराया: प्रधानमंत्री मोदी

(जीएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने असम की धरती से कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि आजादी के बाद से इस राज्य के साथ लगातार अन्याय होता रहा और इसके लिए सबसे बड़ी जिम्मेदार कांग्रेस है। गुवाहाटी में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने कभी असम को अपना नहीं माना और यहां के लोगों के हितों के बजाय घुसपैठियों की सेवा की। जब जरूरत असम की जनता के जख्म भरने और विकास को गति देने की थी, तब कांग्रेस ने केवल अपने वोट बैंक की राजनीति की और बाहरी घुसपैठियों को संरक्षण दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि दशकों तक असम की जमीनों पर अवैध कब्जे होते रहे, स्थानीय लोगों के अधिकार छीने गए, लेकिन कांग्रेस सरकारें मूकदर्शक बनी रहीं। उन्होंने आरोप लगाया कि घुसपैठिये कांग्रेस के कट्टर वोटर बन गए थे और इसी कारण उन्हें राजनीतिक संरक्षण मिलता रहा। मोदी ने हिमंता बिस्वा सरमा सरकार की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज राज्य सरकार लाखों बीघा जमीन को घुसपैठियों से मुक्त करा रही है और असम की असली पहचान को वापस लौटा रही है। मोदी ने पुराने दौर को याद करते हुए कहा कि एक समय असम में आए दिन हिंसा, बंद और रक्तपात की खबरें आती थीं। कर्फ्यू का सन्नाटा आम बात थी और लोगों का जीवन भय के साए में गुजरता था। लेकिन आज तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी है। अब यहां गोलियों की आवाज नहीं, संगीत और संस्कृति की गूंज सुनाई देती है। असम शांति, विकास और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के नए युग में प्रवेश कर चुका है। प्रधानमंत्री गुवाहाटी के सरुसजाई स्टेडियम में आयोजित 'बागुरुम्बा दोहोउ 2026' कार्यक्रम में शामिल हुए थे, जो बोडो समुदाय का पारंपरिक और ऐतिहासिक सांस्कृतिक उत्सव है। उन्होंने कहा कि बोडो समाज की समृद्ध परंपराएं पूरे देश के लिए गर्व का विषय हैं और उनकी सरकार इन संस्कृतियों को सहेजने और आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

बीजेपी ने पैसों के दम पर चुनाव जीता जनादेश नहीं प्रबंधनादेश है: उद्धव ठाकरे

(जीएनएस)। महाराष्ट्र निकाय चुनाव के नतीजों के बाद राज्य की राजनीति में उबाल आ गया है। मुंबई में शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने भाजपा और महायुति गठबंधन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि यह जीत जनता के भरोसे से नहीं बल्कि पैसों और सत्ता तंत्र के दुरुपयोग से हासिल की गई है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में उद्धव ने कहा कि यह चुनाव लोकतंत्र की भावना के आधार पर नहीं, बल्कि खुली खरीद-फरोख्त और प्रलोभनों के सहारे लड़ा गया। उनके मुताबिक जिस पैमाने पर धनबल का इस्तेमाल हुआ, उसने चुनावी प्रक्रिया की पवित्रता पर ही सवाल खड़े कर दिए हैं।

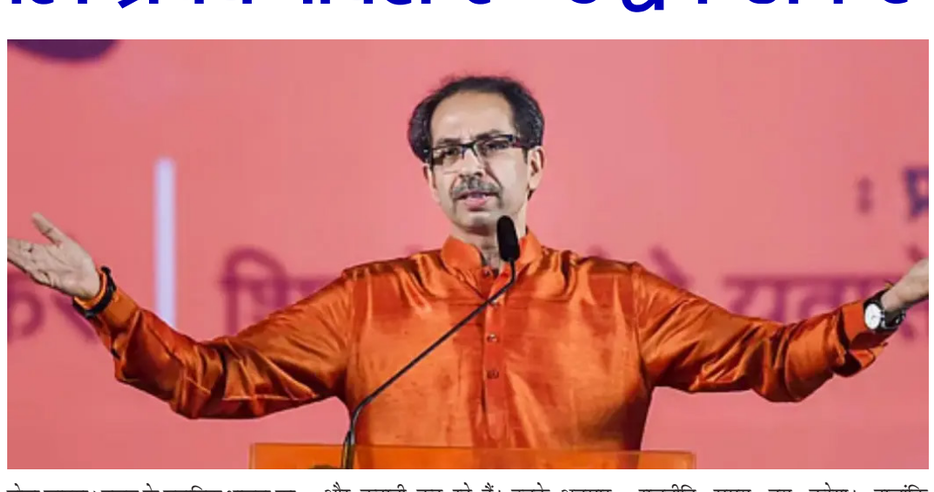

उद्धव ठाकरे ने आरोप लगाया कि मतदान से ठीक पहले कई इलाकों में मतदाताओं को लुभाने के लिए प्रेशर कुकर, साड़ियां, मिक्सर, वॉशिंग मशीन जैसी वस्तुएं बांटी गईं। उन्होंने पूछा कि यह बेहिसाब पैसा कहां से आया और केंद्रीय एजेंसियां इस पर आंखें क्यों मूंदे रहीं। उनके अनुसार अगर यही काम विपक्ष करता तो ईडी और सीबीआई की छापेमारी की कतार लग जाती, लेकिन सत्ता पक्ष के लिए सारे नियम बदल जाते हैं। उन्होंने इसे लोकतंत्र के साथ खुला खिलवाड़ बताया और कहा कि मुंबई जैसे जागरूक शहर में भी मतदाताओं को सामान बांटकर प्रभावित करने की कोशिश की गई।

मेयर चुनाव को लेकर भी उद्धव ने भाजपा की मंशा पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि जिस तरह भाजपा ने उनकी पार्टी को तोड़कर एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री बनाया, उसी तर्ज पर अब शिंदे गुट को भी तोड़ा जाएगा। उद्धव के मुताबिक भाजपा का एकमात्र लक्ष्य किसी भी कीमत पर मुंबई का महापौर पद हथियाना है और इसके लिए वह अपने ही सहयोगियों को कमजोर करने से भी पीछे नहीं हटेगी। उन्होंने तंज कसते हुए पूछा कि क्या अब शिंदे सेना को भी ढाई-ढाई साल के मेयर पद का झुनझुना पकड़ाया जाएगा।

प्रधानमंत्री की मुंबई रैली का जिक्र करते हुए उद्धव ठाकरे ने परिणामों पर सीधा संदेह जताया। उन्होंने कहा कि रैली के दौरान मैदान में कुर्सियां खाली थीं, उत्साह नजर नहीं आ रहा था, फिर अचानक इतने वोट कहां से आ गए। उन्होंने व्यंग्य किया कि क्या खाली कुर्सियों ने मतदान किया। उद्धव ने दावा किया कि जमीनी माहौल महायुति के पक्ष में नहीं था, लेकिन परिणाम कुछ और कहानी कह रहे हैं। उनके अनुसार यह जनादेश कम और प्रबंधनादेश ज्यादा लगता है।

शिंदे गुट द्वारा अपने पार्षदों को फाइव स्टार होटल में ठहराए जाने पर भी उन्होंने तीखा हमला बोला। उद्धव ने कहा कि जो लोग जीत का दावा कर रहे हैं, उन्हें अपने ही पार्षदों पर भरोसा क्यों नहीं है। चुने हुए प्रतिनिधियों को इस तरह घेरे में रखना जनता के फैसले का अपमान है। उन्होंने कहा कि असली डर भाजपा को है, क्योंकि उसे पता है कि यह जीत स्वाभाविक नहीं है।

राज ठाकरे की मनसे के साथ संभावित गठबंधन के सवाल पर उद्धव ने रणनीतिक चुप्पी साध ली। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा कि अभी वे अपने विजयी उम्मीदवारों की मिठाई का स्वाद ले रहे हैं, आगे की राजनीति समय तय करेगा। हालांकि उन्होंने यह जरूर माना कि दोनों दलों के कार्यकर्ताओं के बीच जमीनी तालमेल बेहतर रहा है, जो भविष्य में नई संभावनाओं का संकेत देता है।

हिंदुत्व के मुद्दे पर भी उद्धव ने भाजपा को घेरा। उन्होंने कहा कि बालासाहेब ठाकरे के बिना भाजपा का महाराष्ट्र में अस्तित्व ही नहीं बनता, लेकिन आज वही पार्टी शिवसेना को हिंदुत्व सिखा रही है। उनके मुताबिक भाजपा का हिंदुत्व केवल चुनावी नारा है, जबकि शिवसेना के लिए यह आस्था और संस्कार है। उद्धव ने दोहराया कि उनकी लड़ाई सत्ता के लिए नहीं, बल्कि मुंबई और महाराष्ट्र के स्वाभिमान को बचाने के लिए है और यह संघर्ष आगे भी जारी रहेगा।

संपादकीय

महायुति की महासफलता

महाराष्ट्र में हाल ही में संपन्न स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा के नेतृत्व में महायुति गठबंधन की महत्वपूर्ण सफलता ने राज्य में बड़े राजनीतिक बदलाव का संकेत दे दिया है, जो आने वाले दशकों में राज्य की भगवा राजनीति की विरासत पर वर्चस्व की दिशा भी तय करेगा। राज्य के विधानसभा चुनावों में भाजपा नीत महायुति गठबंधन द्वारा विपक्ष को करारी शिकस्त देने के एक साल से कुछ अधिक समय के बाद अब सत्तारूढ़ गठबंधन ने राज्यव्यापी स्थानीय निकाय चुनावों में अपना दबदबा कायम कर लिया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दशकों तक शिवसेना के वर्चस्व वाले बहुचर्चित बृहन्मुंबई नगर निगम यानी बीएमसी के चुनावों में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। निश्चित रूप से इस हालिया परिणाम से आने वाले सालों में मुंबई की सत्ता में निर्णायक बदलाव आएगा। अविभाजित पार्टी के रूप में, बाल ठाकरे द्वारा स्थापित शिवसेना ने दशकों तक भारत की वित्तीय राजधानी पर शासन किया। लेकिन अब भाजपा की अगुवाई में शिवसेना से अलग हुए एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाला गुट बीएमसी में अहम भूमिका निभाएगा। जैसे महाराष्ट्र सरकार में एकनाथ शिंदे उप मुख्यमंत्री की भूमिका निभा रहे हैं, वैसी बीएमसी में पार्टी की भूमिका रहेगी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दो दशक बाद ठाकरे भाइयों की पार्टियों के एकजुट होकर लड़ने के बावजूद राज्य में महायुति की लहर रुकी नहीं। यही वजह है कि पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की शिवसेना और राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना की हाल ही में सामने आई प्रतीकात्मक एकता चुनावी सफलता में बदलने में कामयाब नहीं हो सकी। वहीं दूसरी ओर शरद पवार और उनके भतीजे अजीत पवार के नेतृत्व वाले राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के गुटों के बीच गठबंधन पूणे में बुरी तरह विफल हो गया। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र की राजनीति में बीएमसी चुनाव परिणामों के गहरे निहितार्थ रहे हैं। बहुचर्चित बृहन्मुंबई नगर निगम यानी बीएमसी को देश का सबसे धनी नगर निगम होने का गौरव हासिल है। जिसके चलते इसका राजनीतिक महत्व बहुत अधिक है।

महाराष्ट्र की राजनीति में बीएमसी के महत्व का अंदाजा इसके बजट से लगाया जा सकता है। इसका बजट वर्ष 2025-26 के लिये 74,427 करोड़ रुपये का है, जो हिमाचल प्रदेश और गोवा जैसे राज्यों के बजट से भी अधिक है। ऐसे में हालिया स्थानीय निकाय चुनाव में भाजपा नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन के वर्चस्व के बाद स्थानीय निकाय की नई संरचना का मुंबई के शासन, नीतिगत प्राथमिकताओं और महाराष्ट्र की राजनीतिक गतिशीलता पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा। यहां सकारात्मक पहलू यह भी है कि जनता ने विकास की आकांक्षा को तरजीह दी और क्षेत्रीय संकीर्णता के नारे को खारिज किया। चुनाव परिणाम मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के विकास के वादे का समर्थन करते हैं। हालांकि, ठाकरे परिवार का 'मराठी मानुष' कार्ड ज्यादा मतदाताओं को आकर्षित नहीं कर पाया। एक बार फिर महाराष्ट्र के स्थानीय निकाय चुनाव परिणामों में कांग्रेस हाशिये पर नजर आई। ऐसे में यह कांग्रेस को फिर से आत्ममंथन का मौका देता है। निर्विवाद रूप से महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव परिणामों ने विपक्ष के महा विकास अघाड़ी गठबंधन के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है, जिसके घटक दल पहले ही महाराष्ट्र की राजनीति में प्रासंगिक बने रहने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। राजनीतिक पंडित कह रहे हैं कि महाराष्ट्र की राजनीति में बरसों तक वर्चस्व रखने वाले ठाकरे और पवार के राजनीतिक परिवार को राज्य में अपनी प्रासंगिकता बनाये रखने के लिये नये सिरे से प्रयास करने होंगे। वहीं दूसरी ओर इन चुनाव परिणामों का एक निष्कर्ष यह भी है कि भाजपा चुनावों में जीतने का गणित सीख गई है। पार्टी के बूथ मैनेजमेंट के साथ संघ का संबल उसकी विजय की राह प्रशस्त करता है। यही वजह है कि स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा न केवल अपने प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ती नजर आई, बल्कि अपने सहयोगियों पर भी भारी पड़ी है।

मशाल बन सत्ता को संभालने का साहित्यिक दायित्व

"एक दिन नेहरू और राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर संसद भवन में साथ-साथ चल रहे थे। अचानक नेहरू कुछ लड़खड़ाये। दिनकर ने उन्हें सहारा दिया। तब नेहरू ने दिनकर को धन्यवाद देते हुए कहा था आपने मुझे गिरने से बचा लिया। इस पर दिनकर ने मुस्कुराते हुए कहा था, 'साहित्य का काम है सत्ता को संभालना'। यह बात हमारे साहित्यकार कब समझेंगे?

आप किसी को अपने घर बुलायें, और फिर उससे पूछें कि वह आपकी बातों से बोर तो नहीं हो रहा तो आप उससे क्या अपेक्षा करेंगे? यही न कि या तो वह आपसे कहेगा, अरे नहीं, आप तो बहुत अच्छी बातें बता रहे हैं, या फिर बोर हो रहा होगा तो कह देगा अपने मन की बात। ऐसे में आपसे अपेक्षा यह होती है कि आप शालीनता के साथ अपनी बात कहने का ढंग बदल देंगे। लेकिन यदि आप ऐसा न करके अपने अतिथि को अपने घर से निकल जाने और फिर कभी न बुलाने की बात कहने लगें तो आपको असभ्य और बदतमीज ही तो कहा जायेगा। उस दिन छत्तीसगढ़ के संत घासीदास विश्वविद्यालय में ऐसा ही हुआ। विश्वविद्यालय ने केंद्रीय साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से हिंदी कहानी की दशा-दिशा पर एक कार्यक्रम आयोजित किया था। देश के बड़े-बड़े साहित्यकार वहां उपस्थित थे। इनमें से एक मनोज रूपड़ा भी थे, जिनकी गणना हिंदी के श्रेष्ठ कहानीकारों में होती है। मेजबान कुलपति शायद स्वागत भाषण दे रहे थे। अचानक उन्होंने सामने बैठे अपने एक अतिथि, मनोज रूपड़ा से पूछ लिया वे उनकी बातों से ऊब तो नहीं रहे और मनोज रूपड़ा ने ईमानदारी से कह दिया, आप मुद्दे पर बोलें तो ज़्यादा अच्छा रहेगा।

कुलपति महोदय ने इसे अपना अपमान समझा और यह कहते हुए कि वरिष्ठ कहानीकार में वॉइस चांसलर से बात करने का विवेक नहीं है, उन्हें फटकारते हुए हाल से बाहर निकलने का आदेश दे दिया। रूपड़ा उठकर बाहर चले गये, पर यह प्रकरण देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है। सब तरफ कुलपति के 'असभ्य' व्यवहार की आलोचना हो रही है।

जिसने भी वायरल वीडियो पर यह प्रकरण देखा-सुना है, वह हैरान ही हो सकता है कि कुलपति जैसे ऊंचे आसन पर बैठा व्यक्ति इतना अनुचित व्यवहार कैसे कर सकता है! उम्मीद यह की जा रही थी कि कार्यक्रम के मेजबान कुलपति अपनी ग़लती का अहसास करते हुए क्षमा मांग लेंगे, या कम से कम अपने व्यवहार पर खेद तो व्यक्त करेंगे ही। पर घटना के पांच-छह दिन गुजर जाने और देशभर में उनके व्यवहार की हो रही भर्त्सना के बावजूद उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया है! इस दौरान साहित्य अकादमी ने एक अच्छा काम अवश्य किया है– अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने इस घटना पर खेद व्यक्त करते हुए घोषणा की है कि संत घासीदास विश्वविद्यालय को आगे से अकादमी किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं देगी और न ही विश्वविद्यालय के साथ मिलकर कोई कार्यक्रम करेगी। यह एक स्वागत-योग्य निर्णय है। खासकर ऐसी स्थिति में जबकि कुछ ही दिन पहले केंद्र सरकार द्वारा अकादमी के पुरस्कारों की घोषणा रोकने पर अकादमी की चुप्पी की आलोचना हो रही थी, साहित्य अकादमी का यह निर्णय कुछ दिलासा देने वाला है।

बहरहाल, इसमें कोई संदेह नहीं कि विवादों में घिरे कुलपति ने सिर्फ एक साहित्यकार का नहीं, पूरे साहित्य-जगत का अपमान किया है। अपमान तो उन्होंने कुलपति के पद और अपने विश्वविद्यालय का भी किया है। जिन शब्दों में, और जिस लहजे में, कुलपति महोदय ने एक साहित्यकार की भर्त्सना की थी, होना तो यह चाहिए था कि उससे वहां उपस्थित सारे साहित्यकार और बाकी श्रोता भी, स्वयं को अपमानित महसूस करते। कुछ लोग अवश्य तब उठकर हाल से बाहर चले गये थे, पर सवाल यह उठता है कि जो साहित्यकार नहीं गये, वे क्यों बैठे रहे? उन्हें क्यों नहीं लगा कि कुलपति महोदय ने एक रचनाकार का ही नहीं, सारे साहित्यकारों का अपमान किया है। आश्चर्य तो इस बात पर भी होना चाहिए कि घटना के बाद लोगों ने उस कार्यक्रम में बैठे रहना उचित समझा। बताया जा रहा है कि आयोजन में कई वरिष्ठ साहित्यकार भी उपस्थित थे। न उन्हें वहां बैठे रहना ग़लत लगा और न ही असभ्य व्यवहार करने वाले कुलपति के हाथों 'सम्मानित' होना! यही नहीं, घटना के इतने दिनों बाद भी, वहां बैठे रहे साहित्यकारों का कोई बयान सामने न आना भी एक रहस्यमयी चुप्पी ही लगता है। शायद रहस्यमयी नहीं है यह चुप्पी। वे चुप क्यों रहे, यह वही जानें, पर यह अपने आप में कोई रहस्य नहीं है कि सत्ता, चाहे वह राजनीतिक हो अथवा प्रशासनिक, अक्सर साहित्य को अपने अधीन रखना चाहती है। चाहती ही नहीं, अधीन मानती भी है। न वह इतिहास से कुछ सीखना चाहती है, न ही वर्तमान को समझना चाहती है। पता नहीं, कुर्सी पर बैठे लोगों को यह याद क्यों नहीं रहता कि कभी बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल ने कवि भूषण की पालकी को कंधा देकर उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट किया था। इस इतिहास को कोई चाहे तो कल्पना भी कह सकता है, पर समझने की बात यह है कि राजा छत्रसाल और कवि भूषण का यह प्रकरण सत्ता और साहित्य के रिश्तों को परिभाषित करने वाला है। यहीं यह भी समझना ज़रूरी है कि किसी छत्रसाल (सत्ता) द्वारा सम्मानित होने के लिए भूषण (साहित्य) को अपनी पात्रता भी सिद्ध करनी होती है। संत घासीदास विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति के द्वारा अनुचित व्यवहार के दौरान वहां उपस्थित साहित्यकारों की चुप्पी यही संकेत देती है कि या तो उन्होंने घटना में निहितार्थ को नहीं समझा या उनमें सत्ता के अनुचित घमंड का प्रतिकार करने का साहस नहीं था। ऐसे साहित्यकारों को अपने आप से यह सवाल पूछना चाहिए कि अनुचित का प्रतिकार करना उन्होंने ज़रूरी क्यों नहीं समझा। वह यह क्यों भूल गये कि साहित्य का काम सत्ता को संभालना होता है, मशाल बनकर आगे चलना होता है।

देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ घटी एक घटना याद आ रही है– एक दिन नेहरू और राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर संसद भवन में साथ-साथ चल रहे थे। अचानक नेहरू कुछ लड़खड़ाये। दिनकर ने उन्हें सहारा दिया। तब नेहरू ने दिनकर को धन्यवाद देते हुए कहा था आपने मुझे गिरने से बचा लिया। इस पर दिनकर ने मुस्कुराते हुए कहा था, 'साहित्य का काम है सत्ता को संभालना'। यह बात हमारे साहित्यकार कब समझेंगे? कब उन्हें लगेगा कि जब कोई सत्ता किसी प्रकार के गर्व का शिकार बनती है तो साहित्य का काम उसका हाथ पकड़कर उसे संभालना होता है? उस दिन एक कुलपति के अनुचित व्यवहार का विरोध करके हमारे साहित्यकार अपनी पात्रता सिद्ध कर सकते थे। कुलपति ने जो किया, वह शर्मनाक था, पर उस व्यवहार का विरोध न करके साहित्यकारों का वहां बैठे रहना भी कम शर्म की बात नहीं है।

बिलासपुर की उस घटना के वायरल हुए वीडियो से जितना कुछ पता चलता है वह यही है कि कुलपति ने जो किया वह अनुचित था और वहां उपस्थित कुछ साहित्यकारों ने जो नहीं किया (यानी प्रतिकार नहीं किया) वह भी कम अनुचित नहीं था। साहित्यकारों की यह चुप्पी सवाल उठाने वाली है। अनुचित के खिलाफ खड़े न होने की विवशता से हमारे कुछ साहित्यकार कब उबरेंगे?

प्रेरणा

भीतर की लौ

एक गांव के मंदिर में रोज शाम एक छोटा सा दीपक जलाया जाता था। मंदिर ऊंचाई पर था, इसलिए वहां हवा हमेशा तेज चलती थी। कई बार पुजारी के मन में विचार आता कि इतनी हवा में दीपक जलाना व्यर्थ है, यह तो कुछ ही देर में बुझ जाएगा। फिर भी परंपरा और आस्था के कारण वह दीपक जलाता रहा। एक दिन आंधी बहुत प्रचंड हो गई। गांव के लोगों ने सलाह दी कि आज दीपक मत जलाइए, हवा बहुत तेज है, पर पुजारी ने उनकी बात नहीं मानी। उसने दीपक जलाया और उसे कांच की छोटी लालटेन में रख दिया। हवा चली, और भी तेज चली, पर दीपक बुझा नहीं। रात में दूर दूर से आने वाले यात्रियों ने उसी छोटे दीपक की रोशनी देखकर मंदिर का रास्ता पाया। अगली सुबह पुजारी ने मुस्कराकर कहा, समस्या हवा नहीं थी, समस्या तैयारी की कमी थी। जब दीपक को सही आवरण मिला, तो वही हवा उसकी रोशनी को दूर तक फैलाने लगी।

यह घटना केवल एक मंदिर या एक दीपक की कथा नहीं है, यह मनुष्य के जीवन का गहरा रूपक है। हमारे जीवन में भी विरोध, आलोचना और कठिनाइयां हवा की तरह चलती रहती हैं। जो व्यक्ति बिना तैयारी के है, वह इन झोंकों में बुझ जाता है, और जो भीतर से मजबूत है, वही विपरीत परिस्थितियों में दूसरों के लिए प्रकाश बनता है। मनुष्य अक्सर अपनी असफलताओं के लिए बाहरी परिस्थितियों को दोष देता है, पर सच्चाई यह है कि असली कमी भीतर की होती है। यदि मन स्थिर है, दृष्टि साफ है और संकल्प मजबूत है, तो बाहर की कोई भी आंधी हमें हरा नहीं सकती। आज के समय में लोग सबसे अधिक अशांत मन से पीड़ित हैं। सुविधाएं बढ़ गई हैं, साधन बढ़ गए हैं, पर भीतर की स्थिरता कम होती जा रही है। छोटी सी आलोचना मन को तोड़ देती है, मामूली असफलता आत्मविश्वास हिला देती है। इसका कारण यह है कि हमने अपने भीतर की लौ को सुरक्षित रखना नहीं सीखा। हम बाहर से मिली प्रशंसा को अपना आवरण समझ लेते हैं, जबकि असली सुरक्षा तो आत्मविश्वास, धैर्य और संतुलन से मिलती है।

भीतरी स्थिरता कोई एक दिन में नहीं आती। यह रोज के छोटे प्रयासों से बनती है। जैसे दीपक को रोज तेल और बाती की जरूरत होती है, वैसे ही मन को भी अच्छे विचार, अनुशासन और सच्चे कर्मों की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति रोज अपने भीतर झांकता है, अपनी कमजोरियों को पहचानता है और उन्हें सुधारने का प्रयास करता है, वही धीरे धीरे मजबूत बनता है। स्थिर मन वाला व्यक्ति शोर में भी शांति खोज लेता है और अशांति के बीच भी सही निर्णय कर पाता है।

कठिनाइयां जीवन का स्वभाव हैं। उनसे भागना समाधान नहीं है। जो लोग मुसीबतों से डरकर रास्ता बदल लेते हैं, वे कभी अपनी क्षमता को नहीं जान पाते। जबकि जो व्यक्ति चुनौतियों के बीच टिके रहते हैं, वही अपने भीतर छिपी शक्ति से परिचित होते हैं। जैसे हवा दीपक की परीक्षा लेती है, वैसे ही संघर्ष मनुष्य की असली पहचान सामने लाते हैं। मजबूत वही है जो टूटकर भी फिर खड़ा हो जाए, गिरकर भी चलना न छोड़े।

समाज में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहां साधारण लोगों ने असाधारण परिस्थितियों में अद्भुत साहस दिखाया। किसी ने गरीबी में पढ़ाई जारी रखी, किसी ने बीमारी से लड़ते हुए परिवार संभाला, किसी ने असफलताओं के बावजूद अपने सपने नहीं छोड़े। इन सबकी ताकत बाहर से नहीं आई, यह उनके भीतर की स्थिरता का परिणाम थी। जब मन शांत होता है, तब निर्णय सही होते हैं, और जब निर्णय सही होते हैं, तो रास्ते अपने आप खुलने लगते हैं।

भीतरी स्थिरता का अर्थ कठोर हो जाना नहीं है। इसका अर्थ है संवेदनशील रहते हुए भी संतुलित रहना। जो व्यक्ति केवल भावनाओं में बहता है, वह कमजोर पड़ जाता है, और जो केवल कठोर तर्क में जीता है, वह सूखा हो जाता है। सही जीवन इन दोनों के बीच का मार्ग है। स्थिर मन वाला व्यक्ति प्रेम भी करता है, पर मोह में नहीं डूबता। वह दुख को महसूस भी करता है, पर उससे टूटता नहीं। आज के युवाओं को यह बात विशेष रूप से समझनी चाहिए। सोशल मीडिया की दुनिया में हर व्यक्ति त्वरित सफलता चाहता है। थोड़ी सी देरी उन्हें निराश कर देती है। पर सच्ची सफलता धीमी आंच पर पकती है। जैसे दीपक की लौ धीरे धीरे प्रकाश फैलाती है, वैसे ही मनुष्य का व्यक्तित्व भी समय के साथ निखरता है। जल्दबाजी में लिया गया निर्णय अक्सर पछतावे का कारण बनता है। परिवार और समाज भी तभी मजबूत बनते हैं जब व्यक्तियों के भीतर स्थिरता हो। अशांत लोग मिलकर शांत समाज नहीं बना सकते। घर में यदि एक व्यक्ति भी धैर्यवान हो, तो वह पूरे वातावरण को संभाल लेता है। जैसे लालटेन में रखा दीपक यात्रियों को राह दिखाता है, वैसे ही स्थिर मन वाला व्यक्ति अपने आसपास के लोगों के लिए सहारा बन जाता है।

जीवन में कई बार ऐसे मोड़ आते हैं जब सब कुछ विपरीत लगता है। उन क्षणों में बाहर से मदद कम मिलती है, असली सहारा भीतर से आता है। जिसने अपने मन को साध लिया, उसके लिए कोई रास्ता बंद नहीं रहता। वह जानता है कि हर रात के बाद सुबह आती है और हर आंधी के बाद आकाश साफ होता है। यही विश्वास उसे टूटने नहीं देता।

इसलिए आवश्यक है कि हम रोज थोड़ा समय अपने भीतर की लौ के लिए निकालें। अच्छा साहित्य पढ़ें, मौन में बैठें, अपने विचारों को परखें और अपने आचरण को सुधारें। बाहरी चमक के पीछे भागने के बजाय भीतर की मजबूती पर ध्यान दें। जब भीतर उजाला होगा, तब बाहर की अंधेरी राहें भी स्पष्ट दिखने लगेंगी।

अंत में वही बात याद रखने योग्य है जो पुजारी ने कही थी। समस्या हवा नहीं, तैयारी की कमी थी। जीवन की आंधियां तो चलती ही रहेंगी, पर यदि हमारे भीतर की लौ सुरक्षित है, तो वही आंधियां हमारी रोशनी को और दूर तक ले जाएंगी। सच्चा बल शरीर से नहीं, धन से नहीं, बल्कि भीतर की स्थिरता से जन्म लेता है। जो इस रहस्य को समझ लेता है, वह स्वयं भी प्रकाशित होता है और दूसरों के जीवन में भी उजाला भर देता है।

'ग्रीनलैंड पर जो देश बीच में आयेगा उस पर टैरिफ ठोंकेगे', यह साधारण बयान नहीं, दुनिया को ट्रंप की खुली धमकी है

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर वैश्विक राजनीति में उथल पुथल मचा दी है। इस बार विवाद का केंद्र बना है ग्रीनलैंड। ट्रंप ने संकेत दिया है कि दुनिया के जो देश ग्रीनलैंड को लेकर अमेरिका की रणनीति का समर्थन नहीं करेंगे, उन पर अमेरिका भारी टैरिफ लगा सकता है। यह बयान ऐसे समय में आया है जब आर्कटिक क्षेत्र में रूस और चीन की सक्रियता तेजी से बढ़ रही है और अमेरिका वहां अपनी पकड़ मजबूत करना चाहता है। डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि ग्रीनलैंड अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। उनका तर्क है कि आर्कटिक क्षेत्र भविष्य की सामरिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र बनने जा रहा है और ग्रीनलैंड इस पूरे क्षेत्र की चाबी है। उन्होंने साफ संकेत दिया कि जो देश इस अमेरिकी सोच के साथ नहीं आएंगे, उन्हें आर्थिक कीमत चुकानी पड़ सकती है। हम आपको बता दें कि ग्रीनलैंड डेनमार्क का स्वायत्त क्षेत्र है और डेनमार्क सरकार ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि ग्रीनलैंड न तो बिकाऊ है और न ही किसी दबाव में सौंपा जा सकता है। ग्रीनलैंड के स्थानीय प्रशासन ने भी अमेरिका की इस सोच को खारिज करते हुए कहा है कि वहां के लोग अपने भविष्य का फैसला खुद करेंगे। वहीं यूरोप के कई देशों ने डेनमार्क के समर्थन में बयान दिए हैं और इसे अंतरराष्ट्रीय नियमों और संप्रभुता के खिलाफ बताया है। साथ ही ट्रंप की टैरिफ धमकी को कई देशों ने आर्थिक जबरदस्ती करार दिया है। ट्रंप के ताजा बयान के बाद ट्रांस अटलांटिक रिश्तों में तनाव साफ दिखाई देने लगा है और नाटो के भीतर भी असहजता बढ़ती नजर आ रही है। देखा जाये तो डोनाल्ड ट्रंप का ग्रीनलैंड को लेकर दिया गया बयान एक ऐसी राजनीति को उजागर करता है जिसमें कूटनीति नहीं बल्कि धमकी हथियार बन चुकी है। ग्रीनलैंड क्यों अहम है यदि इसकी बात करें तो आपको बता दें कि यह कोई साधारण बर्फीला द्वीप नहीं है। यह आर्कटिक क्षेत्र में स्थित एक ऐसा भूभाग है जहां से उत्तरी अटलांटिक पर नजर रखी जा सकती है। यहां दुर्लभ खनिज संसाधन हैं। यहां से मिसाइल चेतावनी प्रणाली, नौसैनिक गतिविधियां और वायु मार्ग नियंत्रित किए जा सकते हैं। यही वजह है कि अमेरिका इसे केवल आर्थिक नहीं बल्कि सैन्य नजरिये से भी देखता है। लेकिन सवाल यह नहीं है कि ग्रीनलैंड कितना महत्वपूर्ण है। असली सवाल यह है कि क्या किसी देश को यह अधिकार है कि वह अपनी सामरिक जरूरतों के नाम पर दूसरे देशों पर आर्थिक दबाव बनाए। ट्रंप का बयान इसी सोच की खतरनाक मिसाल है।

देखा जाये तो टैरिफ अब अमेरिका का सबसे बड़ा हथियार बन चुका है। टैरिफ का इस्तेमाल कभी व्यापार संतुलन के लिए होता था। आज यह राजनीतिक और सामरिक दबाव का औजार बन गया है। ट्रंप की धमकी बताती है कि अमेरिका अब खुले तौर पर कह रहा है या तो हमारे साथ खड़े हो जाओ या आर्थिक सजा भुगतो। यह नीति न केवल वैश्विक व्यापार को नुकसान पहुंचाती है बल्कि छोटे और मध्यम देशों को डर के साए में जीने पर मजबूर करती है। आज ग्रीनलैंड है। कल कोई और मुद्दा होगा। यह रवैया पूरी दुनिया को अस्थिरता की ओर धकेल सकता है।

दूसरी ओर, नाटो की नींव सामूहिक सुरक्षा और आपसी भरोसे पर टिकी है। लेकिन जब नाटो का सबसे शक्तिशाली सदस्य ही दूसरे सदस्य देश पर दबाव डालने लगे, तो यह गठबंधन कैसे टिकेगा। डेनमार्क नाटो का सदस्य है। ग्रीनलैंड उसका हिस्सा है। अगर अमेरिका उसी देश को धमकी दे रहा है, तो यह नाटो पर सीधा हमला है। यह संदेश जा रहा है कि गठबंधन तभी तक मान्य है जब तक वह अमेरिकी हितों के अनुकूल है। इस बीच, यूरोप के कई देशों के भीतर अब यह सवाल उठने लगा है कि क्या अमेरिका सच में भरोसेमंद सुरक्षा साझेदार है या नहीं। यह वही दरार है जो नाटो को अंदर से खोखला कर सकती है। इसमें कोई दो राय नहीं कि अगर अमेरिका ग्रीनलैंड को लेकर आक्रामक रुख अपनाता है, तो इसके दूरगामी सामरिक परिणाम होंगे। रूस और चीन को यह कहने का मौका मिलेगा कि पश्चिमी देश दोहरे मानदंड अपनाते हैं। ऐसे में यूरोप अपने स्वतंत्र रक्षा ढांचे की ओर और तेजी से बढ़ सकता है। इससे नए सैन्य और आर्थिक गुट बन सकते हैं। इसका मतलब यह भी है कि दुनिया एक बार फिर गुटों में बंटने की ओर बढ़ेगी। शीत युद्ध जैसी स्थिति लौट सकती है लेकिन इस बार आर्थिक हथियार ज्यादा खतरनाक होंगे।

अब सवाल उठता है कि क्या नाटो खत्म होने की कगार पर है? जवाब यह है कि नाटो तुरंत खत्म नहीं होगा। लेकिन यह जरूर कहा जा सकता है कि वह अपने सबसे नाजुक दौर में है। अगर अमेरिका इसी तरह सहयोगियों पर दबाव डालता रहा, तो नाटो का अस्तित्व केवल कागजों तक सीमित रह जाएगा। देखा जाये तो किसी भी गठबंधन की ताकत हथियारों से नहीं, भरोसे से आती है। और भरोसा तब टूटता है जब धमकी संवाद की जगह ले ले।

बहरहाल, डोनाल्ड ट्रंप का ग्रीनलैंड को लेकर दिया गया बयान एक चेतावनी है। यह चेतावनी है उस दुनिया के लिए जो नियम आधारित व्यवस्था पर भरोसा करती रही है। यह संकेत है कि आने वाले समय में ताकतवर देश ज्यादा आक्रामक और ज्यादा बेपरवाह हो सकते हैं। अगर इस सोच को समय रहते रोका नहीं गया, तो न केवल नाटो बल्कि पूरी वैश्विक व्यवस्था गहरे संकट में फंस सकती है। ग्रीनलैंड की बर्फ के नीचे केवल खनिज नहीं हैं, वहां भविष्य के टकराव की चिंगारी भी छुपी हुई है।

अभियान

विश्वास की दीवार पर लिखा उल्टा स्वास्तिक

इंदौर का खजराना गणेश मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, यह करोड़ों लोगों की आशाओं का ऐसा केंद्र है जहां मन की थकान उतर जाती है। देश के अलग अलग कोनों से लोग यहां अपनी पीड़ा, सपने और प्रार्थनाएं लेकर आते हैं। मंदिर की भव्यता, इतिहास और अनोखी परंपराओं ने इसे पूरे विश्व में विशेष पहचान दिलाई है। सबसे अधिक चर्चा जिस बात की होती है, वह है भगवान गणेश की पीठ वाली दीवार पर सिंदूर से उल्टा स्वास्तिक बनाने की परंपरा। यह परंपरा सामान्य धार्मिक क्रिया से आगे बढ़कर विश्वास का जीवंत प्रतीक बन चुकी है।

इस मंदिर का इतिहास अठारहवीं शताब्दी से जुड़ा है। सन् 1735 में मराठा शासक रानी अहिल्याबाई होल्कर ने इसका निर्माण करवाया। कहा जाता है कि मुगल काल के कठिन दौर में स्थानीय भक्तों ने गणेश प्रतिमा को एक कुएं में छिपा दिया था ताकि उसे क्षति न पहुंचे। वर्षों बाद अहिल्याबाई को स्वप्न के माध्यम से इस प्रतिमा के स्थान का संकेत मिला। उन्होंने कुएं से मूर्ति निकलवाकर विधिपूर्वक स्थापना कराई और मंदिर का निर्माण कराया। तभी से खजराना गणेश लोगों की आस्था का अटूट केंद्र बन गया।

मंदिर में प्रवेश करते ही वातावरण बदल जाता है। अगरबत्तियों की सुगंध, घंटियों की आवाज और भक्तों के जयकारे मन को भीतर तक छू लेते हैं। यहां आने वाला हर व्यक्ति अलग कहानी लेकर आता है। किसी को नौकरी चाहिए, किसी को संतान सुख, कोई बीमारी से मुक्ति चाहता है तो कोई टूटे रिश्तों की मरम्मत। सबके मन में एक ही भरोसा होता है कि विघ्नहर्ता उनकी सुनेंगे। इसी भरोसे का सबसे अनोखा रूप है उल्टा स्वास्तिक बनाने की परंपरा। सामान्य जीवन में स्वास्तिक शुभता और मंगल का चिन्ह माना जाता है, पर खजराना मंदिर में उल्टा स्वास्तिक मन्नत का प्रतीक है। भक्त मानते हैं कि जब वे सच्चे मन से दीवार पर उल्टा स्वास्तिक बनाते हैं तो उनकी प्रार्थना सीधे भगवान तक पहुंच जाती है। यह परंपरा कब शुरू हुई, इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता, पर पीढ़ियों से लोग इसी तरीके से अपनी इच्छाएं अर्पित करते आ रहे हैं।

भक्त पहले गणेश जी के दर्शन करते हैं, फिर मंदिर की पिछली दीवार पर सिंदूर से उल्टा स्वास्तिक अंकित करते हैं। उस क्षण उनके मन में केवल विश्वास होता है। कई लोग आंखें बंद करके अपनी बात कहते हैं, जैसे भगवान सामने खड़े होकर सुन रहे हों। यह क्रिया केवल रेखाएं खींचना नहीं, बल्कि मन की गहरी पुकार है। लोग अपनी परेशानियां भगवान के चरणों में सौंप देते हैं और हल्के मन से लौटते हैं।

जब किसी की मनोकामना पूरी हो जाती है, तो वह कृतज्ञता व्यक्त करने दोबारा आता है। तब उसी स्थान पर सीधा स्वास्तिक बनाया जाता है। यह धन्यवाद का प्रतीक माना जाता है। अनेक भक्त इस अवसर पर मोदक, लड्डू या अन्य मिठाई का भोग लगाते हैं। कुछ लोग गरीबों को भोजन कराते हैं, कुछ मंदिर में सेवा करते हैं। इस प्रकार प्रार्थना और कृतज्ञता का सुंदर चक्र पूरा होता है।

उल्टे स्वास्तिक के साथ धागा बांधने की परंपरा भी गहराई से जुड़ी है। मंदिर की दीवारों पर बंधे अनगिनत धागे हर रोज बढ़ते रहते हैं। हर धागा किसी न किसी मन की उम्मीद का प्रतीक है। भक्त मानते हैं कि रक्षा सूत्र बांधने से उनकी मन्नत सुरक्षित हो जाती है और गणेश जी स्वयं उसकी रक्षा करते हैं। इसके बाद तीन परिक्रमा करने का विशेष महत्व बताया गया है। कहा जाता है कि परिक्रमा से भक्त और भगवान के बीच संबंध मजबूत होता है और जीवन की बाधाएं धीरे धीरे दूर होने लगती हैं।

खजराना गणेश केवल पूजा स्थल नहीं, इंदौर के सामाजिक जीवन का आधार भी है। शहर में कोई भी शुभ काम हो, सबसे पहले गणेश जी को निमंत्रण देने की परंपरा है। नया व्यापार शुरू करना हो, विवाह हो या गृह प्रवेश, लोग पहले यहां आकर अनुमति मांगते हैं। मान्यता है कि बिना खजराना गणेश के आशीर्वाद के कोई कार्य पूर्ण नहीं माना जाता। यही कारण है कि सुबह से रात तक मंदिर में भीड़ बनी रहती है।

इस मंदिर की महिमा खेल जगत तक फैली हुई है। इसे भारतीय क्रिकेट टीम का अनौपचारिक सुपर चयनकर्ता तक कहा जाता है। जब भी इंदौर में बड़ा मैच होता है या भारतीय टीम किसी महत्वपूर्ण दौरे पर जाती है, खिलाड़ी और प्रशंसक यहां आकर प्रार्थना करते हैं। जीत की कामना के लिए उल्टा स्वास्तिक बनाया जाता है। स्थानीय लोगों का दृढ़ विश्वास है कि गणेश जी के आशीर्वाद से टीम को सफलता मिलती है।

समय के साथ मंदिर का स्वरूप भव्य होता गया, पर मूल भावना वही रही। यहां अमीर गरीब का भेद मिट जाता है। पंक्ति में खड़ा हर व्यक्ति केवल भक्त होता है। यह समानता ही इस स्थान की सबसे बड़ी शक्ति है। लोग बताते हैं कि यहां आकर मन अपने आप शांत हो जाता है, जैसे किसी अदृश्य हाथ ने भीतर की उलझनें सुलझा दी हों।

कई लोग प्रश्न करते हैं कि उल्टा स्वास्तिक कैसे काम करता है। पर आस्था तर्क से नहीं, अनुभव से चलती है। जब व्यक्ति पूरे विश्वास से संकल्प करता है तो उसके भीतर सकारात्मक ऊर्जा जागती है। वही ऊर्जा उसे प्रयास करने की शक्ति देती है। शायद इसी कारण अनेक लोगों के जीवन में चमत्कारिक बदलाव दिखाई देते हैं।

मंदिर से जुड़े सैकड़ों किस्से सुनने को मिलते हैं। किसी की रुकी नौकरी लगी, किसी का बरसों पुराना मुकदमा सुलझा, किसी के घर संतान हुई। लोग इन अनुभवों को गणेश जी की कृपा मानते हैं। इन कथाओं ने मंदिर की महिमा को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया है।

खजराना गणेश का प्रभाव केवल धार्मिक नहीं, सांस्कृतिक भी है। त्योहारों पर पूरा परिसर दीपों से जगमगा उठता है। गणेश चतुर्थी पर तो ऐसा लगता है जैसे पूरा शहर यहीं सिमट आया हो। भजन, कीर्तन और भंडारे का वातावरण लोगों को आपस में जोड़ देता है। यह स्थान समाज की सामूहिक चेतना का केंद्र बन गया है।

यहां आने वाला व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटता। किसी को समाधान मिलता है, किसी को धैर्य, किसी को नई दिशा। कई बार मनचाहा परिणाम तुरंत नहीं मिलता, पर भीतर एक भरोसा जन्म लेता है कि रास्ता जरूर खुलेगा। यही भरोसा जीवन को आगे बढ़ाता है।

उल्टा स्वास्तिक की परंपरा हमें यह सिखाती है कि मन की सच्चाई सबसे बड़ी पूजा है। रेखाएं केवल माध्यम हैं, असली शक्ति भावना में है। जब व्यक्ति पूरी ईमानदारी से अपने दुख स्वीकार करता है और समाधान के लिए प्रार्थना करता है, तभी परिवर्तन शुरू होता है।

आज का समय भागदौड़ और तनाव से भरा है। ऐसे में खजराना गणेश मंदिर लोगों के लिए विश्राम स्थल बन गया है। यहां कुछ पल बैठकर व्यक्ति अपने भीतर लौट आता है। शोर भरे जीवन में यह स्थान मौन की तरह काम करता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मेट्रो में रोजाना सफर करने वालों की संख्या 3 वर्ष में चार गुना बढ़ी
दैनिक यात्रियों की संख्या 35 हजार से डेढ़ लाख तक पहुंची

(जीएनएस)। गांधीनगर, 17 जनवरी : अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो सेवा आज तेज, सुरक्षित और विश्वसनीय सार्वजनिक परिवहन का एक मजबूत उदाहरण बन गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गत 11 जनवरी को अहमदाबाद मेट्रो रेल फेज-2 के तहत गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर तक मेट्रो सेवा का शुभारंभ किया था। अब महात्मा मंदिर तक मेट्रो नेटवर्क का विस्तार होने से अहमदाबाद और गांधीनगर के बीच कनेक्टिविटी सुदृढ़ होगी, साथ ही नागरिकों की यात्रा और भी सुगम एवं किफायती होगी।

हजारों कर्मचारियों, छात्रों एवं पर्यटकों को होगा लाभ

यात्रियों और पर्यटकों को अब महात्मा मंदिर मेट्रो स्टेशन से गांधीनगर रेलवे स्टेशन तक सीधी कनेक्टिविटी भी उपलब्ध होगी। इसके अलावा, मेट्रो के जरिए अक्षरधाम मंदिर और दांडी कुटीर जैसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों तक आसानी से पहुंचा जा सकेगा। मेट्रो नेटवर्क के इस विस्तार के कारण हजारों कर्मचारियों, छात्रों और पर्यटकों को बड़ा लाभ होगा। विशेषकर, महात्मा मंदिर में होने वाले राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में आने वाले अतिथियों तथा कड़ी सर्व विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों को बड़ी राहत मिलेगी।

अक्टूबर 2022 से दिसंबर 2025 के दौरान 11.50 करोड़ से अधिक लोगों ने किया मेट्रो में सफर

अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो सेवा के कारण पिछले 3 वर्षों में यात्रियों को किफायती और कुशल शहरी परिवहन का अनुभव मिला है। अक्टूबर 2022 से दिसंबर 2025 के दौरान कुल 11.50 करोड़ से अधिक यात्रियों ने मेट्रो में सफर किया है।

मासिक आंकड़ों को देखें, तो वर्ष 2023 के दौरान प्रतिमाह औसतन 12 से 27 लाख यात्रियों ने मेट्रो का उपयोग किया। वर्ष 2024 में यह संख्या बढ़कर लगभग 27 से 35 लाख प्रतिमाह दर्ज की गई। वहीं, वर्ष 2025 में इस आंकड़े में बड़ा उछाल देखने को मिला। विशेषकर जुलाई और सितंबर में प्रतिमाह 44 लाख से अधिक यात्रियों ने मेट्रो सेवा का लाभ उठाया।

▶▶ अक्टूबर 2022 से दिसंबर 2025 के दौरान 11.50 करोड़ से अधिक लोगों ने मेट्रो में यात्रा की

▶▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गत 11 जनवरी को महात्मा मंदिर तक मेट्रो सेवा का शुभारंभ किया

अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो : 68 किमी का नेटवर्क, 53 स्टेशन और लाखों यात्रियों का बढ़ता विश्वास

मेट्रो फेज-2 के पूरा होने से गुजरात मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (जीएमआरसी) द्वारा विकसित 68 किमी का मेट्रो नेटवर्क अब 53 स्टेशनों को कवर करेगा। महात्मा मंदिर तक मेट्रो सेवा शुरू होने से निजी वाहनों पर निर्भरता कम होगी, यातायात की समस्या से निजात मिलेगी और यात्रियों को किफायती एवं पर्यावरण अनुकूल सफर का विकल्प मिलेगा। मेट्रो के व्यापक विस्तार से एक ऐसी एकीकृत प्रणाली बनी है, जो राज्य के नागरिकों को दशकों तक सेवाएं देगी। अहमदाबाद मेट्रो रेल एक्सटेंशन गुजरात की वैश्विक अर्बन सेंटर बनने की यात्रा में एक अहम मील का पत्थर बन गया है।

कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के दौरान 2 दिनों में रिकॉर्ड 4.11 लाख यात्रियों ने मेट्रो का लाभ उठाया

गत वर्ष अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में आयोजित आईपीएल मैचों और कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के दौरान लाखों लोगों ने मेट्रो से सफर करने को तरजीह दी। आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों एवं रथयात्रा जैसे कार्यक्रमों के दौरान यात्रियों की संख्या 1.6 से 2.1 लाख दर्ज की गई। जबकि, 25 और 26 जनवरी, 2025 को नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में आयोजित दो दिवसीय कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के दौरान कुल 4.11 लाख से अधिक यात्रियों ने मेट्रो सेवा का उपयोग किया, जो बड़े अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में मेट्रो की क्षमता और विश्वसनीयता को दर्शाता है।

18 जनवरी को अहमदाबाद स्टेशन पर ट्रैफिक ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य तीव्र गति से चल रहा है। पुनर्विकास कार्य के अंतर्गत अहमदाबाद स्टेशन पर रेलवे लाइन संख्या 06, 07, 08, 09 एवं 10 के ऊपर नए दक्षिण फुट ओवर ब्रिज (FOB) के स्पान-03 के लिए कंपोजिट स्टील गर्डरों का लॉन्चिंग कार्य एआरटी क्रेन एवं हाइड्रा की सहायता से किया जाएगा। इस कार्य के लिए 18 जनवरी 2026 को ट्रैफिक ब्लॉक लिया गया है। इस ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनों को आंशिक रद्द तथा कुछ ट्रेनों को पूर्ण रूप से रद्द किया गया है।जिसका विवरण निम्नानुसार हैः

18 जनवरी को शॉर्ट टर्मिनेट होने वाली ट्रेनें

1.गाड़ी संख्या 19033 वलसाड–अहमदाबाद गुजरात क्वीन एक्सप्रेस वटवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा वटवा और अहमदाबाद के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

2.गाड़ी संख्या 22953 मुंबई सेंट्रल–अहमदाबाद गुजरात सुपरफास्ट एक्सप्रेस वटवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा वटवा और अहमदाबाद के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

18 जनवरी को पूर्ण रूप से रद्द होने वाली ट्रेनें

1.गाड़ी संख्या 20959/20960 वलसाड–वडनगर–वलसाड इंटरसिटी सुपरफास्ट एक्सप्रेस पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

2.गाड़ी संख्या 19036/19035 मणिनगर–वडोदरा–वटवा इंटरसिटी एक्सप्रेस पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

3.गाड़ी संख्या 69101/69102 वडोदरा–वटवा–वडोदरा मेमू पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

4.गाड़ी संख्या 69115/69130 वडोदरा–वटवा–आणंद मेमू पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

5.गाड़ी संख्या 59549/59550 वडोदरा–वटवा–वडोदरा संकल्प फास्ट पैसेंजर पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखकर यात्रा करें। ट्रेनों की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

वेरावल-देलवाडा-वेरावल ट्रेनों का समय यथावत, अन्य 04 मीटर गेज ट्रेनों के समय में संशोधन

(जीएनएस)। यात्रियों को सूचित किया जाता है कि यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के मीटर गेज (MG) खंड की कुछ ट्रेन सेवाओं के समय में संशोधन किया गया है। यह संशोधन 19 जनवरी, 2026 से प्रभावी होगा।

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, वेरावल से देलवाड़ा की यात्रा करने वाले यात्रियों हेतु ट्रेन संख्या 52949/52950 (वेरावल–देलवाड़ा–वेरावल) के समय में परिवर्तन नहीं किया जाएगा, यह ट्रेन अपने निर्धारित समयानुसार चलती रहेगी।भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार जिन ट्रेनों के समय में संशोधन किया गया है उसका विस्तृत विवरण इस प्रकार हैः-

1.ट्रेन संख्या 52946 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से जूनागढ़ स्टेशन से प्रस्थान समय 06.15 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 10.25 बजे होगा।

2.ट्रेन संख्या 52955 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 06.15 बजे तथा जूनागढ़ स्टेशन पर पहुंचने का समय 10.25 बजे होगा।

3.ट्रेन संख्या 52933 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 14.45 बजे तथा जूनागढ़ स्टेशन पर पहुंचने का समय 18.55 बजे होगा।

4.ट्रेन संख्या 52956 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 20.01.2026 से जूनागढ़ स्टेशन से प्रस्थान समय 08.00 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 12.10 बजे होगा।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि संशोधित समय-सारिणी का विस्तृत विवरण संबंधित स्टेशनों पर प्रदर्शित किया जा रहा है तथा रेलवे के अधिकृत माध्यमों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा से पूर्व नवीनतम समय-सारिणी की जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें।

एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक ने कंपनी सचिवों के लिए खोले नए बैंकिंग रास्ते

(जीएनएस)। देश के पेशेवर वर्ग को ध्यान में रखते हुए एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक ने एक नई और लक्षित पहल की शुरुआत की है। बैंक ने भारतीय कंपनी सचिव संस्थान (आईसीएसआई) के सदस्यों के लिए विशेष बैंकिंग सुविधाएँ और अनुकूलित क्रेडिट कार्ड समाधान पेश करने की घोषणा की है। इस कदम को पेशेवर समुदाय और बैंकिंग क्षेत्र के बीच मजबूत साझेदारी के रूप में देखा जा रहा है, जो आने वाले समय में वित्तीय सेवाओं के स्वरूप को और अधिक व्यावहारिक व उपयोगी बना सकता है।

शनिवार को नई दिल्ली में एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक और आईसीएसआई के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस एमओयू के माध्यम से दोनों संस्थाओं ने कंपनी सचिवों की पेशेवर जरूरतों को समझते हुए ऐसी सेवाएँ विकसित करने पर सहमति जताई है, जो उनके रोजमर्रा के वित्तीय कामकाज को सरल और प्रभावी बना सकें। बैंक का मानना है कि कंपनी सचिव कॉरपोरेट जगत की रीढ़ होते हैं और उन्हें ऐसी बैंकिंग व्यवस्था की जरूरत होती है जो तेज, भरोसेमंद और उनकी भूमिका के अनुकूल हो। इस समझौते के तहत देशभर के हजारों आईसीएसआई सदस्यों को विशेष रूप से डिजाइन किए गए चालू और बचत खातों की सुविधा मिलेगी। ये खाते सामान्य बैंकिंग सेवाओं से अलग होंगे और पेशेवर लेनदेन, टैक्स भुगतान, डिजिटल ट्रांजैक्शन तथा निवेश प्रबंधन जैसी जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं। इसके साथ ही बैंक ने 'जेनिथ क्रेडिट कार्ड' की पेशकश की है, जिसे इस पहल का सबसे आकर्षक हिस्सा माना जा रहा है।

सप्ताह के दौरान सोना वायदा में 5379 रुपये और चांदी वायदा में 48253 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा 186 रुपये तेज

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 9 से 15 जनवरी के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 3547384.84 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 477159.48 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 3070159.79 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 38914 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल साप्ताहिक प्रीमियम टर्नओवर 49148.77 करोड़ रुपये का हुआ। आलोच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 379443.17 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 137997 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 143590 रुपये के ऑल टाइम हाई और नीचे में 137729 रुपये पर पहुंचकर, 137742 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 5379 रुपये या 3.91 फीसदी ऊछलकर 143121 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 3582 रुपये या 3.18 फीसदी की तेजी के संग 116248 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 488 रुपये या 3.47 फीसदी की मजबूती के साथ 14542 रुपये प्रति 1 ग्राम बंद हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 137991 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 144444 रुपये और नीचे में 137700 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 5167 रुपये या 3.75 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 142850 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में प्रति 10 ग्राम 138361 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 143979 रुपये और नीचे में 138345 रुपये पर पहुंचकर, 138275 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 5131 रुपये या 3.71 फीसदी की तेजी के संग 143406 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ।

▶▶ कमोडिटी वायदाओं में 477159 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 3070159 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 379443.17 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38914 पॉइंट के स्तर पर

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 245600 रुपये के भाव पर खूलकर, 292960 रुपये के उच्च और 243670 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 243324 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 48253 रुपये या 19.83 फीसदी की बढ़त के साथ 291577 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 47434 रुपये या 19.28 फीसदी बढ़कर 293421 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 47513 रुपये या 19.31 फीसदी की तेजी के संग 293540 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 45601.02 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 38.3 रुपये या 3.02 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 1308.5 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 10.5 रुपये या 3.42 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 317.85 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा 9.85 रुपये या 3.19 फीसदी बढ़कर 318.7 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ। जबकि सीसा जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 1.05 रुपये या 0.55 फीसदी की बढ़त के साथ 192 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 52095.63 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 5228 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 5621 रुपये के उच्च और 5183 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 186 रुपये या 3.59 फीसदी की मजबूती के साथ 5366 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 189 रुपये या 3.65 फीसदी की तेजी के संग सप्ताह के अंत में 5368 रुपये प्रति बैरल के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 307 रुपये के भाव पर खूलकर, 316.4 रुपये के उच्च और 272.5 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 306.7 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 23.6 रुपये या 7.69 फीसदी लुढ़ककर 283.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बंद हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 23.5 रुपये या 7.66 फीसदी औंधकर 283.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर बंद हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 998.5 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 25.2 रुपये या 2.52 फीसदी गिरकर 973.4 रुपये प्रति किलो हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 147829.03 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 231614.15 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 36921.02 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 4466.59 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 289.83 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 3802.39 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 12107.58 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 39919.40 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 15.50 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 14152 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 46291 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 8545 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 119320 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 15441 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 9720 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 24041 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 45207 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 13432 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 27358 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 35627 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 39205 के उच्च और 35627 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 3108 पॉइंट बढ़कर 38914 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।

बहुध्रुवीय युग में भारत से गढ़ी जाएगी नई आर्थिक इबारत

(जीएनएस)। दुनिया तेजी से बदल रही है। शीतयुद्ध के बाद जिस एकध्रुवीय व्यवस्था ने दशकों तक वैश्विक अर्थव्यवस्था को दिशा दी, वह अब धीरे-धीरे बहुध्रुवीय स्वरूप ले चुकी है। शक्ति के नए केंद्र उभर रहे हैं, व्यापार के पुराने रास्ते चुनौती झेल रहे हैं और निवेश की धाराएँ नए ठिकाने तलाश रही हैं। इसी बदले हुए परिदृश्य में मुंबई पहली बार ऐसे वैश्विक विमर्श का केंद्र बनने जा रही है, जहाँ भविष्य की आर्थिक व्यवस्था की रूपरेखा गढ़ने की कोशिश होगी। 17 से 19 फरवरी तक आयोजित होने वाला ग्लोबल इकोनॉमिक कोऑपरेशन 2026 सम्मेलन केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि उस संक्रमण काल का दस्तावेज बनेगा जिसमें विश्व अर्थव्यवस्था नए संतुलन की तलाश कर रही है।

इस सम्मेलन का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह किसी एक देश या समूह की पहल न होकर बहुपक्षीय संवाद का मंच है। फ्यूचर इकोनॉमिक कोऑपरेशन काउंसिल के नेतृत्व में हो रहे इस आयोजन को महाराष्ट्र सरकार और भारत के विदेश मंत्रालय का सहयोग प्राप्त है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को सम्मेलन का संरक्षक बनाया गया है, जो यह संकेत देता है कि राज्य और केंद्र दोनों इस पहल को रणनीतिक दृष्टि से कितनी गंभीरता से देख रहे हैं। क्यूरेशन की जिम्मेदारी विश्वमित्र रिसर्च फाउंडेशन की संस्थापक प्रियम गांधी-मोदी के पास है, जो लंबे समय से वैश्विक आर्थिक सहयोग के विषय पर सक्रिय रही हैं। मुंबई को इस संवाद के लिए चुनना भी प्रतीकात्मक है। यह शहर केवल भारत की आर्थिक राजधानी नहीं, बल्कि पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाला सेतु रहा है। बंदरगाहों से लेकर वित्तीय बाजारों तक, मुंबई ने हमेशा वैश्विक पूंजी को भारत की विकास कथा से जोड़ा है। आज जब आपूर्ति श्रृंखलाएँ पुनर्गठित हो रही हैं और निवेशक नए भरोसेमंद गंतव्य खोज रहे हैं, तब यह शहर स्वाभाविक रूप से वैश्विक संवाद का केंद्र बनता है।

सम्मेलन के एजेंडे में जिन विषयों को रखा गया है, वे आने वाले दशक की अर्थनीति तय करेंगे। इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग, उन्नत विनिर्माण, तकनीक आधारित विकास, ऊर्जा संक्रमण और लचीली सप्लाई चेन—ये केवल शब्द नहीं, बल्कि वे मोर्चे हैं जिन पर देशों की प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों तय होंगे। महामारी, युद्धों और भू-राजनीतिक तनावों ने जिस तरह वैश्विक व्यापार को झकझोरा है, उसके बाद भरोसेमंद आर्थिक ढाँचे की जरूरत पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। प्रियम गांधी-मोदी का कहना है कि इस पहल का मूल उद्देश्य अर्थव्यवस्थाओं को बिखराव और संरक्षणवाद की प्रवृत्तियों से बचाना है। उनके अनुसार भारत ऐसा मंच प्रदान कर सकता है जहाँ सरकारें, निवेशक और उद्योग जगत साझा समाधान खोज सकें। विदेश मामलों के प्रभारी विजय चौथाईवाले भी मानते हैं कि नियम आधारित और सहयोगपरक आर्थिक ढाँचा ही वैश्विक स्थिरता की गारंटी बन सकता है। इन बयानों से स्पष्ट है कि सम्मेलन केवल वैचारिक चर्चा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि ठोस नीतिगत दिशा देने का प्रयास करेगा। तीसरे दिन 'इमर्जिंग लीडर्स सर्कल' की शुरुआत इस आयोजन को भविष्य से जोड़ती है। आईआईएम और कोलंबिया यूनिवर्सिटी जैसे संस्थानों की भागीदारी यह बताती है कि अगली पीढ़ी के नेतृत्व को भी इस विमर्श में स्थान दिया जा रहा है। युवा उद्यमी और प्रबंधक ही आने वाले वर्षों में नवाचार और निवेश की असली धुरी बनेंगे, इसलिए उन्हें वैश्विक संवाद से जोड़ना दूरदर्शी कदम है।

सम्मेलन में जिन क्षेत्रों पर विशेष जोर रहेगा, वे भारत की विकास प्राथमिकताओं से भी मेल खाते हैं। स्वच्छ ऊर्जा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, फिनटेक, लॉजिस्टिक्स और उन्नत मैन्युफैक्चरिंग—ये वे सेक्टर हैं जहाँ भारत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में बड़ी भूमिका निभाना चाहता है। मंत्री, संप्रभु कोषों के प्रतिनिधि, संस्थागत निवेशक और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सीईओ एक ही मंच पर बैठकर संभावनाओं और चुनौतियों पर बात करेंगे, तो निर्णयों की जमीन भी मजबूत होगी।

यह सम्मेलन उस समय हो रहा है जब दुनिया भरोसे के संकट से गुजर रही है। व्यापार युद्ध, प्रतिबंधों की राजनीति और क्षेत्रीय संघर्षों ने आर्थिक सहयोग की भाषा को कमजोर किया है। ऐसे दौर में मुंबई से उठने वाली आवाज यदि समावेश, कनेक्टिविटी और साझा समृद्धि की बात करती है, तो उसका असर दूर तक जाएगा। भारत स्वयं वैश्विक दक्षिण की आकांक्षाओं का प्रतिनिधि बनकर उभरा है और यह मंच उस भूमिका को और मजबूत कर सकता है।

आने वाले तीन दिनों में होने वाला यह मंथन शायद तुरंत परिणाम न दे, लेकिन यह उस रास्ते की शुरुआत जरूर करेगा जहाँ बहुध्रुवीय दुनिया टकराव के बजाय तालमेल की दिशा चुन सके। मुंबई की धरती से यदि नए आर्थिक सेतु बनते हैं, तो यह केवल भारत की नहीं, पूरी दुनिया की जीत होगी। यही इस सम्मेलन की असली सार्थकता होगी—एक ऐसे भविष्य की खोज, जहाँ विकास का अर्थ सबके लिए अवसर हो।

तीसरी तिमाही में आईडीबीआई बैंक ने दिखाई स्थिरता की ताकत

(जीएनएस)। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के लिए वर्ष 2025-26 की तीसरी तिमाही कई उतार–चढ़ाव लेकर आई, लेकिन आईडीबीआई बैंक ने इस दौर में संतुलन और स्थिरता बनाए रखी। बैंक ने अक्टूबर से दिसंबर 2025 की अवधि में 1,935 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया, जो पिछले वर्ष की समान तिमाही के 1,908 करोड़ रुपये के लगभग बराबर है। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और घरेलू बाजार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बावजूद मुनाफे का यह स्तर बताता है कि बैंक अपनी व्यावसायिक रणनीति को संभलकर आगे बढ़ा रहा है।

हालांकि आय के मोर्चे पर कुछ दबाव साफ दिखाई दिया। शेयर बाजार को दी गई जानकारी के अनुसार तिमाही के दौरान बैंक की कुल आय घटकर 8,282 करोड़ रुपये रह गई, जबकि एक साल पहले यह 8,565 करोड़ रुपये थी। ब्याज से होने वाली कमाई में भी गिरावट दर्ज की गई और यह 7,816 करोड़ रुपये से घटकर 7,074 करोड़ रुपये पर आ गई। विशेषज्ञ मानते हैं कि ब्याज दरों में उतार–चढ़ाव और कर्ज की मांग में सुस्ती का असर इस कमी के रूप में सामने आया है। इसके बावजूद बैंक ने परिचालन खर्चों पर नियंत्रण रखते हुए मुनाफे को लगभग स्थिर रखने में सफलता पाई।

सबसे सकारात्मक तस्वीर परिसंपत्ति गुणवत्ता के मोर्चे पर दिखाई दी। सकल एनपीए अनुपात घटकर 2.57 प्रतिशत रह गया, जो पिछले वर्ष की समान तिमाही में 3.57 प्रतिशत था। यह सुधार बताता है कि बैंक ने फंसे कर्ज की वसूली और जोखिम प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया है। शुद्ध एनपीए 0.18 प्रतिशत पर स्थिर रहा, जो भारतीय बैंकिंग मानकों के लिहाज से काफी मजबूत स्थिति मानी जाती है। पूंजी पर्याप्तता अनुपात बढ़कर 24.63 प्रतिशत हो जाना भी बैंक की वित्तीय सेहत के लिए भरोसे का संकेत है। हालांकि परिसंपत्तियों पर प्रतिफल यानी आरओए में मामूली गिरावट देखी गई और यह 1.83 प्रतिशत पर आ गया। इसका अर्थ यह है कि बैंक को अपनी संपत्तियों से मिलने वाले रिटर्न को और बेहतर बनाने की चुनौती बनी हुई है। जानकारों का कहना है कि डिजिटल बैंकिंग में निवेश, खुदरा कर्ज के विस्तार और कम लागत वाले संसाधन जुटाने पर जोर देकर इस मोर्चे पर सुधार किया जा सकता है। आईडीबीआई बैंक पिछले कुछ वर्षों से पुनर्गठन और रणनीतिक बदलावों के दौर से गुजर रहा है। सरकार और एलआईसी की भागीदारी, प्रबंधन में सुधार और तकनीकी उन्नयन ने बैंक को नई दिशा दी है।

पश्चिम रेल्वे
विभिन्न मरम्मत कार्य

सीनियर DEN (दक्षिण) मुंबई सेंट्रल, मुंबई - 400008, निम्नलिखित ई-टेंडर आमंत्रित करते हैं:

क्रम नं.	टेंडर सूचना संख्या और दिनांक	कार्य और स्थान	कार्य की अनुमानित लागत ₹	इएमडी ₹
1	BCT/25-26/298 दि. 14.01.2026	चर्चगेट-विरार सेक्शन - SSE (P.Way) दादर और अंधेरी सेक्शन के अधिकार क्षेत्र में मानसून 2026 के लिए पुलियों और पुलियों से जुड़े नालों की सालाना सफाई।	15,41,522.88	30,800/-
2	BCT/25-26/299 दि. 14.01.2026	चर्चगेट-विरार सेक्शन - SSE (P.Way) बोरीवली सेक्शन के अधिकार क्षेत्र में मानसून 2026 के लिए पुलियों और पुलियों से जुड़े नालों की सालाना सफाई।	11,70,604.88	23,400/-
3	BCT/25-26/300 दि. 14.01.2026	चर्चगेट - विरार सेक्शन: SSE (P. Way) दादर, अंधेरी और बोरीवली सेक्शन के तहत साल 2026 के लिए मानसून के दौरान निचले इलाकों में D.G. पंप से पटरियों से पानी निकालना।	1,63,53,600.00	2,31,800/-
4	BCT/25-26/301 दि. 14.01.2026	चर्चगेट - विरार सेक्शन: SSE (P. Way) भायंदर सेक्शन के अधिकार क्षेत्र में 2026 साल के लिए मानसून के दौरान D.G. पंपों द्वारा निचले इलाकों में पटरियों से पानी निकालना।	62,10,900.00	1,24,200/-
5	BCT/25-26/302 दि. 14.01.2026	चर्चगेट - विरार सेक्शन: 25-26 साल में मंजूर ट्रैक काम के सिलसिले में सीनियर DEN (S) मुंबई सेंट्रल सेक्शन के तहत 60 kg 90 UTS और R-260 ग्रेड की रेल की इन-सीटू वेल्डिंग और प्रीफैब्रिकेटेड मोल्ड और सिंगल शॉट क्रूसिबल के साथ ऑटोमैटिक टेपिंग थिम्बल के साथ R-260 ग्रेड की रेल के वेल्डिंग हिस्से की सप्लाई।	1,13,69,197.97	2,06,900/-

ऊपर दिए गए सभी टेंडरों के लिए, जमा करने की तारीख और समय: 10.02.2026 के 15:00 बजे तक। खोलने की तारीख और समय: 10.02.2026 को 15:30 बजे। ज़्यादा जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जाएं। 1008

हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly | हमें फोलो करें: X.com/WesternRly

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'मेक इन इंडिया, मेड फॉर द वर्ल्ड' के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में गुजरात का एक और ठोस कदम

▸▸ मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड खोरज में 35 हजार करोड़ रुपए के निवेश से प्रति वर्ष कुल 10 लाख कारों के उत्पादन का नया प्लांट विकसित करेगी

▸▸ 12 हजार लोगों को संभावित रोजगार के अवसर मिलेंगे

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल एवं मारुति सुजुकी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हिसाशी ताकेउची की उपस्थिति में गांधीनगर में राज्य सरकार और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के बीच इन्वेस्टमेंट लेटर हैंड ओवर सेरेमनी आयोजित

▸▸ उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरक उपस्थिति

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'मेक इन इंडिया, मेड फॉर द वर्ल्ड' के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में देश के विकास रोल मॉडल राज्य गुजरात ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में एक और ठोस कदम उठाया है। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड खोरज में जीआईडीसी द्वारा उपलब्ध कराई गई 1750 एकड़ भूमि पर 35 हजार करोड़ रुपए के निवेश से व्हीकल मैन्युफैक्चरिंग के नए प्लांट की स्थापना करेगी। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल एवं मारुति सुजुकी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हिसाशी ताकेउची की उपस्थिति में गांधीनगर में इस प्लांट के निवेश के लिए इन्वेस्टमेंट लेटर हैंड ओवर सेरेमनी आयोजित की गई।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी तथा मारुति सुजुकी के होल-टाइम डायरेक्टर एवं एक्जीक्यूटिव कमिटी मेंबर श्री सुनील कक्कर भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मारुति के इस नए प्लांट से संभावित रूप से 12 हजार से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। इतना ही नहीं, इस प्लांट के परिणामस्वरूप आसपास के क्षेत्रों में एन्सिलरी यूनिट्स और एमएसएमई इकाइयां भी स्थापित होंगी, जिससे अनुमानित 7.50 लाख से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे। एक संपूर्ण क्लस्टर के निर्माण होने से ऑटो हब के रूप में गुजरात की पहचान को अधिक बल मिलेगा।

इस प्रोजेक्ट अंतर्गत प्रति वर्ष 2.5 लाख कार उत्पादन क्षमता वाले 4 प्लांट मिलकर प्रति वर्ष कुल 10 लाख कार की उत्पादन क्षमता वाला प्लांट विकसित किया जाएगा। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड की योजना के अनुसार पहले प्लांट का उत्पादन वित्तीय वर्ष 2029 से शुरू किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के इस प्रोजेक्ट निवेश का स्वागत करते हुए कहा कि यह केवल एक नई ऑटोमोबाइल उत्पादन सुविधा नहीं है, बल्कि देश के सबसे बड़े और सबसे प्रतिस्पर्धी ऑटो मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग कॉरिडोर को अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत-गुजरात-जापान संबंधों के सदैव उत्साहपूर्ण रहने का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि अपनी जापान यात्रा के दौरान सुजुकी के सीईओ द्वारा गुजरात को 'सेकेंड होम' के रूप में बताए जाने के विश्वास को बनाए रखने के लिए सरकार निरंतर प्रयासरत रहेगी।

उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के लीडरशिप में सस्टेनेबल पॉलिसी मेकिंग से गुजरात एक पॉलिसी-ड्रिवन स्टेट बना है। इसके साथ ही, रोबस्ट इन्फास्ट्रक्चर और उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप विकास दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा भी गुजरात ने अर्जित की है।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से शुरू हुई वाइब्रेंट समिट में शुरुआत से ही जापान एक पार्टनर कंट्री और विकास का सहभागी रहा है।

श्री हर्ष संघवी ने कहा कि जब मारुति सुजुकी मोटर्स पहली बार गुजरात में निवेश के लिए आई थी, तब राज्य सरकार द्वारा जो तत्परता और सहयोग दिखाया गया था, वही सहयोग मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में निरंतर मिलता रहेगा।

मारुति सुजुकी मोटर्स के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हिसाशी ताकेउची ने गुजरात सरकार द्वारा मारुति सुजुकी को मिल रहे सहयोग की प्रशंसा करते हुए कहा कि गुजरात मोबिलिटी ट्रांसफॉर्मेशन में लीडर बनता जा रहा है, जिसका लाभ मारुति सुजुकी को भी मिला है।

उन्होंने कहा कि गुजरात सरकार के साथ मजबूत सहभागिता से गुजरात में मारुति के उत्पादन इकाइयों द्वारा 'मेक इन इंडिया' पहल में भी मारुति सुजुकी सक्रिय योगदान देने के लिए तत्पर है।

यह उल्लेख करना आवश्यक है कि इस नई व्हीकल फैसिलिटी के निर्माण के लिए गुजरात सरकार और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के बीच वर्ष 2024 की वाइब्रेंट समिट में एमओयू किया गया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2012 में सुजुकी मोटर्स को गुजरात में निवेश के लिए निमंत्रण भेजा था। इसके परिणामस्वरूप हांसलपुर में मारुति का गुजरात का पहला प्लांट कार्यरत है। इस प्लांट में वर्तमान में प्रति वर्ष 7.50 लाख कारों का उत्पादन होता है और वित्तीय वर्ष 2026-27 तक 2.50 लाख कारों की वृद्धि कर प्रति वर्ष 10 लाख यूनिट उत्पादन की योजना बनाई गई है।

इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री मनोज कुमार दास, उद्योग एवं खान विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव श्री संजीव कुमार, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, जीआईडीसी की एमडी श्रीमती प्रविणा डी. के., मारुति सुजुकी मोटर्स के सीएफओ अर्नब रॉय, सीनियर एक्जीक्यूटिव ऑफिसर श्रीमती मंजरी चौधरी, एक्जीक्यूटिव ऑफिसर श्री परीक्षित मैनी, श्री जिगर देसाई सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

संगम तीरे जुटने लगी आस्था की भीड़

(जीएनएस)। प्रयागराज की धरती एक बार फिर भक्ति और विश्वास के महासागर में बदलने लगी है। माघ मेले के सबसे बड़े स्नान पर्व मौनी अमावस्या की पूर्व संध्या पर ही संगम नगरी में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा है। देश के कोने–कोने से आए लोग गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम में डुबकी लगाने को आतुर हैं। प्रशासन का अनुमान है कि इस बार तीन से चार करोड़ श्रद्धालु संगम में स्नान करेंगे, जिसे देखते हुए पूरा शहर आस्था के इस महापर्व के स्वागत के लिए तैयार कर दिया गया है। रविवार 18 जनवरी को होने वाले मौनी अमावस्या स्नान को माघ मेले का सबसे पुण्यदायी अवसर माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन मौन रहकर त्रिवेणी में स्नान करने से मनुष्य के पापों का क्षय होता है और आत्मिक शुद्धि प्राप्त होती है। यही विश्वास लोगों को हजारों किलोमीटर की यात्रा कर प्रयागराज खींच लाता है। आधी रात से ही संगम क्षेत्र की ओर जाने वाले रास्तों पर श्रद्धालुओं की कतारें दिखाई देने लगीं। कहीं भजन–कीर्तन की गूंज है तो कहीं साधु–संतों के दल अपने अनुयायियों के साथ स्नान की तैयारी में जुटे हैं। भीड़ के सुरक्षित और सुगम आवागमन के लिए प्रशासन ने अभूतपूर्व इंतजाम किए हैं। शनिवार की आधी रात से ही शहर में रूट डायवर्जन लागू कर दिया गया है। प्रयागराज को जोड़ने वाले सात प्रमुख मार्गों पर वाहनों की आवाजाही नियंत्रित की जा रही है और बाहरी जिलों से आने वाले वाहनों के लिए शहर के बाहरी हिस्सों में विशाल पार्किंग स्थल बनाए गए हैं। श्रद्धालुओं को पैदल मार्गों से सीधे घाटों तक पहुँचाने की व्यवस्था की गई है ताकि कहीं भी अव्यवस्था न फैले।

संगम और किला घाट सहित सभी प्रमुख स्नान घाटों को विशेष रूप से सजाया–संवारा गया है। करीब आठ किलोमीटर लंबे तट क्षेत्र में 24 स्नान घाट तैयार किए गए हैं, जिन्हें अलग–अलग सेक्टरों में बाँटा गया है। मजबूत बैरिकेडिंग, पोंटून पुलों और चौड़े मार्गों के माध्यम से भीड़ के प्रवेश और निकास की अलग–अलग व्यवस्था की गई है। प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था, साफ–सफाई और पेयजल केंद्रों की स्थापना से श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसका पूरा ध्यान रखा गया है।

सुरक्षा के लिहाज से यह अब तक की सबसे बड़ी तैनाती मानी जा रही है। लगभग 15 हजार पुलिसकर्मी, अर्धसैनिक बलों की टुकड़ियाँ और विशेष सुरक्षा दस्ते पूरे मेला क्षेत्र में तैनात किए गए हैं। ड्रोन कैमरों से लगातार निगरानी की जा रही है और सैकड़ों सीसीटीवी कैमरे हर गतिविधि पर नजर रखे हुए हैं। सेक्टर मजिस्ट्रेट और वरिष्ठ अधिकारी स्वयं मैदान में रहकर व्यवस्था संभाल रहे हैं। नो-व्हीकल जोन की सख्त व्यवस्था लागू की गई है ताकि घाटों के आसपास भीड़ का दबाव न बढ़े।

मेले में आए श्रद्धालुओं के चेहरों पर थकान से अधिक उत्साह दिखाई दे रहा है। कई परिवार पीढ़ियों से मौनी अमावस्या पर संगम स्नान की परंपरा निभाते आ रहे हैं। बुजुर्ग, महिलाएँ, युवा और बच्चे—सभी एक ही विश्वास की डोर से बँधे हुए हैं। कल्पवास करने वाले संतों के शिविरों में भोर से ही मंत्रोच्चार गूंजने लगता है। पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर उठा है।

प्रशासन का कहना है कि इतनी विशाल भीड़ को संभालना चुनौती जरूर है, लेकिन पिछले अनुभवों और आधुनिक तकनीक के सहारे हर परिस्थिति से निपटने की तैयारी कर ली गई है। चिकित्सा शिविर, एंबुलेंस, खोया–पाया केंद्र और आपदा प्रबंधन टीमें चौबीसों घंटे सक्रिय रहेंगी। लक्ष्य केवल इतना है कि आस्था के इस महासमागम से हर श्रद्धालु सुरक्षित और संतुष्ट होकर लौटे।

संगम की रेती पर उठती भक्ति की लहरें यह बता रही हैं कि प्रयागराज केवल एक शहर नहीं, बल्कि विश्वास की जीवंत धारा है। मौनी अमावस्या का यह स्नान पर्व एक बार फिर साबित करेगा कि भारतीय संस्कृति में आस्था आज भी सबसे बड़ी शक्ति है, जो करोड़ों लोगों को एक सूत्र में बाँध देती है।

माघ मेला: एक पखवारे में चलाई गईं 394 स्पेशल रेलगाड़ियां

(जीएनएस)। प्रयागराज में आयोजित माघ मेला 2026 के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को सुगम और सुरक्षित यात्रा उपलब्ध कराने के लिए भारतीय रेलवे ने इस वर्ष अभूतपूर्व इंतजाम किए। दो जनवरी से सोलह जनवरी के बीच केवल पंद्रह दिनों की अवधि में 394 मेला विशेष रेलगाड़ियों का संचालन किया गया, जिससे देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले लाखों यात्रियों को बड़ी राहत मिली। संगम नगरी की ओर बढ़ती आस्था की धारा को संभालने में रेलवे की यह भूमिका सबसे महत्वपूर्ण कड़ियों में से एक साबित हुई।

उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज मंडल के नेतृत्व में यह पूरा अभियान सुनियोजित ढंग से चलाया गया। मंडल रेल प्रबंधक रजनीश अग्रवाल के निर्देशन और अपर मंडल रेल प्रबंधक दीपक कुमार के मार्गदर्शन में विशेष ट्रेनों की समय सारिणी, प्लेटफार्म प्रबंधन और यात्री सुविधाओं पर लगातार निगरानी रखी गई। जनसंपर्क अधिकारी अमित कुमार सिंह के अनुसार इन 394 विशेष गाड़ियों में से 298 का संचालन उत्तर मध्य रेलवे ने किया, जबकि उत्तर रेलवे की 34 और पूर्वोत्तर रेलवे की 62 विशेष रेलगाड़ियों ने भी श्रद्धालुओं को संगम तक पहुंचाने में योगदान दिया।

मेला क्षेत्र में यात्रियों का दबाव दिन प्रतिदिन बढ़ रहा था, इसलिए रेलवे ने पारंपरिक व्यवस्था से आगे बढ़कर एक्सटेंडेड सेवाएं, रिंग रेल सेवाएं और अल्प दूरी की समयबद्ध ट्रेनें चलाईं। आसपास के जिलों से आने वाले यात्रियों के लिए छोटे अंतराल पर लोकल विशेष गाड़ियां उपलब्ध कराई गईं ताकि बस अड्डों और स्टेशनों पर भीड़ का जमाव न हो। इन प्रयासों से प्रयागराज जंक्शन, सूबेदारगंज, नैनी और प्रयाग स्टेशनों के बीच यातायात का संतुलन बना रहा और यात्रियों को लंबी प्रतीक्षा का सामना नहीं करना पड़ा।

विशेष ट्रेनों के साथ-साथ नियमित रेल सेवाओं को भी पूरी क्षमता के साथ संचालित किया गया। मेला अवधि में 2710 नियमित गाड़ियां चलीं और विशेष ट्रेनों को जोड़ने के बाद कुल 3104 रेलगाड़ियों का संचालन हुआ। यह आंकड़ा बताता है कि रेलवे ने केवल अतिरिक्त व्यवस्था ही नहीं की, बल्कि सामान्य परिचालन को भी बिना प्रभावित किए श्रद्धालुओं की जरूरतों को प्राथमिकता दी। प्लेटफार्मों पर अतिरिक्त टिकट काउंटर, पूछताछ केंद्र और उद्घोषणा प्रणाली को मजबूत किया गया, जिससे यात्रियों को सही जानकारी समय पर मिलती रही।

रेलवे अधिकारियों के अनुसार कंट्रोल रूम से चौबीसों घंटे निगरानी, विभिन्न विभागों के बीच बेहतर तालमेल और अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती ने इस विशाल प्रबंधन को संभव बनाया। सुरक्षा के लिहाज से आरपीएफ और जीआरपी की विशेष टीमें तैनात रहीं, जबकि भीड़ नियंत्रण के लिए स्वयंसेवकों और स्काउट गाइड की मदद ली गई। सफाई, पेयजल और चिकित्सा सहायता जैसी सुविधाओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया ताकि यात्रा केवल आसान ही नहीं, बल्कि सुरक्षित भी रहे। माघ मेला भारतीय आस्था का ऐसा महापर्व है जहां करोड़ों लोग संगम में डुबकी लगाने पहुंचते हैं। इतनी विशाल संख्या को संभालना किसी भी परिवहन तंत्र के लिए चुनौतीपूर्ण होता है, लेकिन इस बार रेलवे ने जिस तत्परता और संवेदनशीलता के साथ जिम्मेदारी निभाई, उसने श्रद्धालुओं का भरोसा और मजबूत किया। विशेष रेलगाड़ियों का यह सफल संचालन केवल आंकड़ों की उपलब्धि नहीं, बल्कि जनसेवा का जीवंत उदाहरण बन गया है, जिसने प्रयागराज आने वाले हर यात्री के मन में सुविधा और सुरक्षा का भाव जगाया।

कोहरे की दीवार बनी काल, एनएच-2 पर थम गई रफ्तार

(जीएनएस)। शनिवार की सुबह जब फतेहपुर की धरती नींद से जाग ही रही थी, तभी घने कोहरे ने राष्ट्रीय राजमार्ग-2 पर ऐसा दृश्य रच दिया जिसने लोगों की सांसें रोक दीं। मलवां थाना क्षेत्र के सौंरा गांव के पास सफेद धुंध की मोटी चादर ने सड़क को लगभग अदृश्य कर दिया था। वाहन रेंग रहे थे, हेडलाइटें भी बेबस नजर आ रही थीं और इसी अंधी धुंध के बीच एक के बाद एक करीब दस वाहन आपस में टकरा गए। पल भर में शांत हाईवे चीख-पुकार और सायरनों से भर उठा। इस हादसे में लगभग पंद्रह लोग घायल हो गए और कई यात्रियों की जान बाल-बाल बची। सुबह का वक्त था, जब रोजमर्रा की तरह बसें, ट्रक और निजी वाहन अपने-अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहे थे। कोहरा इतना घना था कि कुछ मीटर दूर भी कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक सबसे आगे चल रहे किसी वाहन ने अचानक ब्रेक लगाया और उसके पीछे आ रहे वाहन संभल नहीं सके। रोडवेज बस, कार, डंपर, लोडर और ट्रक एक-दूसरे में ऐसे उलझ गए मानो लोहे की गठरी बन गई हो। टक्कर की आवाज दूर तक सुनाई दी और आसपास के गांवों के लोग मदद के लिए दौड़ पड़े।

हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस और एंबुलेंस मौके पर पहुंचीं। बचाव दल ने कड़ी मशक्कत कर वाहनों में फंसे लोगों को बाहर निकाला। कई यात्री सीटों के बीच दबे हुए थे, जिन्हें गैस कटर और रस्सियों की मदद से सुरक्षित निकाला गया। घायलों को फतेहपुर के जिला अस्पताल और आसपास के निजी चिकित्सालयों में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों के अनुसार कुछ लोगों को गंभीर चोटें आई हैं, जबकि अधिकांश की हालत खतरे से बाहर है।

क्षेत्राधिकारी नगर वीर सिंह ने बताया कि प्राथमिक जांच में दुर्घटना का मुख्य कारण घना कोहरा और कम दृश्यता ही प्रतीत हो रही है, फिर भी सभी तकनीकी पहलुओं की पड़ताल की जा रही है।

इस दुर्घटना ने एक बार फिर यह याद दिला दिया कि सर्द मौसम में कोहरा किस तरह जानलेवा साबित हो सकता है। शनिवार को केवल फतेहपुर ही नहीं, बल्कि जौनपुर और प्रतापगढ़ समेत पूर्वांचल के कई जिलों में सुबह से ही घनी धुंध छाई रही। कुछ दिनों से धूप निकलने के कारण लोगों को ठंड से थोड़ी राहत मिली थी, लेकिन तापमान में गिरावट के साथ कोहरा दोबारा लौट आया। सड़कों पर वाहन चालक दिन में भी लाइट जलाकर चलने को मजबूर दिखे और बस अड्डों पर यात्रियों की भीड़ ठिठुरती रही।

मौसम विभाग के आंकड़े बताते हैं कि क्षेत्र में आर्द्रता 84 प्रतिशत तक पहुंच गई है और हवा की गति मात्र पांच किलोमीटर प्रति घंटा रही, जिसके कारण कोहरा देर तक टिका रहा। अधिकतम तापमान 21 डिग्री और न्यूनतम 8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। विशेषज्ञों का कहना है कि आने वाले कुछ दिनों में बादल और ठंडी हवाओं के चलते पारा और नीचे जा सकता है। ऐसे में कोहरे की स्थिति और गंभीर हो सकती है।

हाईवे पर हुए इस हादसे के बाद प्रशासन ने वाहन चालकों से विशेष सावधानी बरतने की अपील की है। ट्रैफिक पुलिस ने गति सीमा कम रखने, फॉग लाइट के इस्तेमाल और सुरक्षित दूरी बनाए रखने के निर्देश जारी किए हैं। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या हम मौसम की इन चुनौतियों के लिए सचमुच तैयार हैं। शनिवार की यह दुर्घटना केवल वाहनों की टक्कर नहीं थी, बल्कि चेतावनी थी कि प्रकृति के सामने जरा-सी लापरवाही भी भारी पड़ सकती है। फतेहपुर का यह कोहरा भरा दिन लंबे समय तक लोगों के मन में सिहरन बनकर याद रहेगा।

महंगाई के बोझ तले पिसती पेंशन को मिल सकता है सहारा, ईपीएफओ में 11 साल बाद बढ़ोतरी की आहट

(जीएनएस)। देश के करोड़ों सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए लंबे इंतजार के बाद राहत की उम्मीद जगने लगी है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन की न्यूनतम पेंशन में 11 वर्षों से कोई बदलाव नहीं हुआ है, लेकिन अब संकेत मिल रहे हैं कि सरकार इस जमे हुए आंकड़े को बदलने की तैयारी कर रही है। सूत्रों के मुताबिक आगामी बजट 2026 के दौरान या उसके तुरंत बाद न्यूनतम पेंशन राशि बढ़ाने का फैसला लिया जा सकता है। मौजूदा समय में ईपीएफओ पेंशनधारकों को मात्र एक हजार रुपये प्रतिमाह मिलते हैं, जो बढ़ती महंगाई और जीवनयापन की वास्तविक जरूरतों के सामने बेहद अपर्याप्त साबित हो रहे हैं।

पिछले एक दशक में दवाओं, भोजन, मकान किराये और रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में कई गुना वृद्धि हो चुकी है, लेकिन पेंशन की राशि वहीं ठहरी रही। सेवानिवृत्त कर्मचारियों का कहना है कि यह राशि सम्मानजनक जीवन तो दूर, न्यूनतम जरूरतें पूरी करने के लिए भी पर्याप्त नहीं है। भारतीय मजदूर संघ समेत अनेक श्रमिक संगठनों ने सरकार के समक्ष लगातार यह मांग उठाई है कि न्यूनतम पेंशन को कम से कम सात हजार से दस हजार रुपये प्रतिमाह किया जाए, ताकि बुजुर्ग कर्मचारियों को आर्थिक सुरक्षा का वास्तविक सहारा मिल सके। इस विषय की संवेदनशीलता का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि मामला सर्वोच्च न्यायालय में भी विचाराधीन है। अदालत में दायर याचिकाओं में तर्क दिया गया है कि सामाजिक सुरक्षा का दायरा केवल नाममात्र का नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविक जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। विशेषज्ञों का मानना है कि पेंशन बढ़ाने से सरकार पर वित्तीय बोझ जरूर पड़ेगा, लेकिन यह कदम लाखों परिवारों को गरीबी की कगार से बचाने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

सरकारी गलियारों से मिल रहे संकेत बताते हैं कि पेंशन सुधार को व्यापक सामाजिक सुरक्षा योजना के हिस्से के रूप में देखा जा रहा है। सरकार चाहती है कि संगठित क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारी सेवानिवृत्ति के बाद भी सम्मानजनक जीवन जी सकें। इसी उद्देश्य से न्यूनतम पेंशन बढ़ाने के साथ-साथ अंशदान संरचना और पेंशन गणना के फॉर्मूले पर भी पुनर्विचार की संभावना जताई जा रही है। वित्त मंत्रालय और श्रम मंत्रालय के बीच इस मुद्दे पर कई दौर की चर्चा हो चुकी है।

विश्लेषकों का कहना है कि यदि बजट में इस दिशा में घोषणा होती है तो यह लाखों पेंशनभोगियों के लिए ऐतिहासिक कदम होगा। इससे न केवल उनकी क्रय शक्ति बढ़ेगी, बल्कि ग्रामीण और छोटे शहरों की अर्थव्यवस्था को भी सहारा मिलेगा, क्योंकि पेंशन का बड़ा हिस्सा स्थानीय बाजार में ही खर्च होता है। वर्षों से उपेक्षित इस वर्ग को आर्थिक संबल देने की मांग अब राजनीतिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर मजबूत होती जा रही है।

ऑनलाइन कट्टरपंथ के जाल पर एनआईए का शिकंजा: डिजिटल प्लेटफॉर्म से फैल रही साजिश का बड़ा खुलासा

(जीएनएस)। देश में डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए फैलाए जा रहे चरमपंथी नेटवर्क के खिलाफ राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने बड़ा कदम उठाते हुए गुजरात से जुड़े एक गंभीर मामले में पांच आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल कर दी है। अहमदाबाद की विशेष एनआईए अदालत में प्रस्तुत इस आरोपपत्र में खुलासा किया गया है कि अल-कायदा इन इंडियन सबकॉन्टिनेंट से प्रभावित यह गिरोह टेलीग्राम, व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम जैसे माध्यमों का उपयोग कर युवाओं को जिहाद, गजवा-ए-हिंद और लोकतांत्रिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसा रहा था। एजेंसी के अनुसार यह केवल ऑनलाइन प्रचार तक सीमित गतिविधि नहीं थी, बल्कि इसके पीछे सुनियोजित साजिश, विदेशी संपर्क और हिंसक प्रशिक्षण की योजना भी छिपी हुई थी। चार्जशीट में जिन पांच लोगों के नाम शामिल हैं, उनमें मोहम्मद फरदीन, कुरैशी सेफुल्ला, मोहम्मद फाइक, जीशान अली और शमा परवीन प्रमुख हैं। इन सभी पर यूएपीए, भारतीय न्याय संहिता और शस्त्र अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत गंभीर आरोप लगाए गए हैं। जांच एजेंसी का कहना है कि यह नेटवर्क अलग-अलग शहरों में फैला हुआ था और इसका उद्देश्य युवाओं को भावनात्मक रूप से भड़काकर उन्हें प्रतिबंधित संगठनों की विचारधारा से जोड़ना था। डिजिटल माध्यमों पर तैयार किए गए समूहों में लगातार भड़काऊ वीडियो, ऑडियो क्लिप और लेख साझा किए जाते थे, जिनमें खिलाफत और शरिया शासन की वकालत की जाती थी। जांच के दौरान यह बात भी सामने आई कि दिल्ली निवासी मोहम्मद फाइक इस पूरे तंत्र का अहम सूत्रधार था। उसने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट और विशेष रूप से बनाए गए ऑनलाइन समूहों के जरिए अक़ीस और जैश-ए-मोहम्मद के नेताओं के भाषणों व लेखों के अंश प्रसारित किए। इन सामग्रियों को इस तरह संपादित किया जाता था कि वे युवाओं के मन में हिंसक भावनाएं पैदा करें और उन्हें विदेशी धरती पर प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित करें। अहमदाबाद, मोडासा और नोएडा में मौजूद अन्य आरोपी भी इसी डिजिटल प्रचार अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे।

बेंगलुरु की रहने वाली शमा परवीन के बारे में एजेंसी ने चौंकाने वाली जानकारी दी है। वह एक पाकिस्तानी नागरिक सुमेर अली के निरंतर संपर्क में थी और उसी के माध्यम से प्रतिबंधित साहित्य, वीडियो और प्रोपेगैंडा सामग्री प्राप्त करती थी। दोनों के बीच एन्क्रिप्टेड चैट के जरिए संवाद होता था, जिसमें अभियानों की रूपरेखा, नए सदस्यों की भर्ती और सामग्री के प्रसार की रणनीति पर चर्चा की जाती थी। एनआईए के अनुसार विदेशी हैंडलर्स से जुड़े फंड ट्रांसफर के संकेत भी मिले हैं, जिनकी पड़ताल अभी जारी है।

करीब अठारह महीने तक चली इस जांच के दौरान एजेंसी ने कई स्थानों पर छापेमारी कर महत्वपूर्ण साक्ष्य जुटाए। डिजिटल उपकरणों से एन्क्रिप्टेड संदेश, प्रोपेगैंडा वीडियो, हथियार प्रशिक्षण से जुड़े दस्तावेज और विस्फोटक सामग्री के मैनुअल बरामद किए गए। इन दस्तावेजों से यह स्पष्ट हुआ कि नेटवर्क केवल वैचारिक प्रचार तक सीमित नहीं था, बल्कि भविष्य में हिंसक गतिविधियों को अंजाम देने की तैयारी भी की जा रही थी। एजेंसी का दावा है कि समय रहते कार्रवाई न होती तो कई युवा इस जाल में फंसकर देश की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन सकते थे।

एनआईए अधिकारियों के अनुसार यह मामला बताता है कि आतंकवादी संगठन अब सीधे संपर्क के बजाय ऑनलाइन माध्यमों से अपनी पैठ बना रहे हैं। सोशल मीडिया और मैसेजिंग ऐप्स उनके लिए नए भर्ती केंद्र बन गए हैं। इसलिए केवल गिरफ्तारी पर्याप्त नहीं, बल्कि डिजिटल निगरानी और जागरूकता भी उतनी ही जरूरी है। चार्जशीट दाखिल होने के बाद अदालत में सुनवाई की प्रक्रिया शुरू होगी, लेकिन जांच एजेंसी अभी भी इस नेटवर्क से जुड़े अन्य कड़ियों की तलाश में जुटी हुई है। यह कार्रवाई एक स्पष्ट संदेश है कि देश के खिलाफ नफरत और हिंसा फैलाने की किसी भी कोशिश को कानून के शिकंजे से बचने नहीं दिया जाएगा।